सबला

वर्ष 6 : अंक 1 सेवाग्राम विकास संस्थान, नई दिल्ली अप्रैल-मई, 1993

सहयोग मंडल

कमला भसीन

ज्ञानेंद्र प्रसाद जैन

'जागोरी' समूह

संपादिका

शारदा जैन

उप-संपादिका

सुहास कुमार

वीणा शिवपुरी

चित्रांकन

बिंदिया थापर

वितरण

प्रतिभा गुप्ता

ग्रामीण बहनों की द्विमासिक पत्रिका—शिक्षा विभाग, मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अनुदानप्रदत; डाक्टर शारदा जैन (सेवा ग्राम विकास संस्थान, 1 दरियागंज, नई दिल्ली-110 002) द्वारा संपादित व प्रकाशित तथा इन्द्रप्रस्थ प्रैस (सी. बी. टी.), नेहरू हाउस, 4 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110 002 में मुद्रित।

इस अंक में

हमारी बात	1
समता: महिला कला जत्था —सुहास कुमार	3
हमारे हाथ में देकर देखो	9
एक अकेली क्या नहीं कर सकती —वीणा शिवपुरी	11
अब हर पंचायत में औरतें होंगी —मणिमाला	13
सिलसिला यूं रुकेगा —विद्या सोनी	15
महिला सरपंच का संपूर्ण साक्षर गांव —परदेशी राम वर्मा	16
अन्यायी न्याय —कमला भसीन	17
भंवरी का सपना —मणिमाला	18
अबला से सबला बनी —शकुंतला जैन	21
जल, जंगल, जमीन पर हक —सुहास कुमार	23
रामकली ने हार नहीं मानी —वीणा शिवपुरी	27
जीवन के बदलते दिन —आरती श्रीवास्तव	29
अहिल्या की सच्चाई —विजी श्रीनिवासन	31
बीड़ी कामगार कोआपरेटिव —जुही जैन	33
कुछ यहां की: कुछ वहां की	35

हमारी बात

बच्चे को जन्म कौन देता है? सब लोग जानते हैं कि मां जन्म देती है। लेकिन कितने स्कूलों में बच्चों की मां का नाम लिखने की इज़ाज़त है? कितने स्कूलों में मां का नाम लिखा जाता है? हर जगह पिता का नाम होता है। बच्चा पिता के नाम से जाना जाता है, मां के नाम से नहीं। मां का भी तो अपना नाम होता है। फिर मां अपना नाम क्यों नहीं लिखती? यह कितना बड़ा अन्याय है! लेकिन बहना, अब इस अन्याय के खिलाफ गुहार शुरू हो गई है। थोड़ी सफलता भी मिली है।

इसी साल 12 जनवरी को सुप्रीम कोर्ट ने एक फैसला सुनाया है। फैसला यह है कि अब स्कूलों में मां चाहे तो अपना नाम लिखवा सकती है। पहले तो दिल्ली नगर निगम यह फैसला मानने को तैयार नहीं था। लेकिन बाद में इस सचाई के सामने निगम के अफसरों को झुकना पड़ा। वे मान गए हैं कि स्कूल में दाखिला लेने के लिए जो फार्म होता है उसे बदला जाएगा। पहले उसमें केवल पिता के नाम के लिए जगह छोड़ी जाती थी। अब दोनों के नाम के लिए जगह छोड़ी जाएगी। और किसी भी बच्चे को मजबूर नहीं किया जाएगा कि वह अपने पिता का नाम बताए। इसी तरह किसी औरत को मजबूर नहीं किया जाएगा कि वह अपने बच्चे के पिता का नाम बताए।

हमने यह तो जान लिया कि हमें वह हक मिल गया जो सालों पहले हमसे छीन लिया गया था। मां बनना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। यह अधिकार हमें प्रकृति ने दिया है। किसी देश के संविधान या किसी देश की सरकार ने नहीं दिया है। इसीलिए हमारा यह हक कोई छीन भी नहीं सकता है। जब बच्चे को औरत पैदा करती है तो उसे मां के नाम से क्यों नहीं पहचाना जाना चाहिए? लेकिन हमें यह हक हासिल नहीं था। अब एक लम्बी लड़ाई के बाद यह हक दिल्ली की औरतों को मिला है। आपको मालूम है यह लड़ाई किसने लड़ी?

यह लड़ाई दिल्ली की उन परेशान व दुखी औरतों ने लड़ी जिसे हमारा समाज 'पतिता' कह कर बुलाता है। हां, बहनो। पतिता उद्धार समिति ने 1988 में ही सुप्रीम कोर्ट में एक अर्जी डाल कर यह अधिकार मांगा था। इस अर्जी में कहा गया था कि औरत मां है यह साबित नहीं करना पड़ता जबकि पुरुष को साबित करना पड़ता है कि वही उस बच्चे का पिता है। सिर्फ औरत जानती है कि बच्चे का पिता कौन है। पिता का होना विश्वास पर टिका हुआ है। लेकिन मां का होना दिखने वाला सच है। कोई भगवान भी तो इस धरती पर अपने आप प्रकट नहीं होता। उसे मां के गर्भ के रास्ते ही धरती पर आना पड़ता है। फिर मां के नाम से हमारा समाज इतना परहेज क्यों करता है? अगर कोई बच्चा अपने

पिता का नाम नहीं बता पाता तो उसकी मां को कुलटा कहा जाता है। कलंकिनी कहा जाता है। लेकिन कितने ही बच्चे अपनी मां का नाम नहीं जानते। उनके पिता पर उंगली नहीं उठती। इसी अर्जी पर हुई बहस सुनने के बाद अदालत ने फैसला सुनाया कि अब मां का नाम स्कूलों में दाखिले के लिए काफी होगा।

यह एक ऐसा फैसला है जिसे हमें ही लागू करना है। किसी पुलिस को, या किसी सरकार को नहीं लागू करना है। नगर निगम को तो सिर्फ मां के नाम के लिए जगह बनानी है। उस कोरे कागज पर लिखना तो हमें है। तो क्या अब माताएं इस जगह पर अपना नाम लिखेंगी? लिख कर देखें अपना नाम। देखना, कितना अच्छा लगता है।

मणिमाला

समता—महिला कला जत्था

सुहास कुमार

सोनिया पानीपत, हरियाणा से हैं। बी.ए. अंतिम वर्ष की छात्रा हैं। रुचि है अभिनय करना व साक्षरता अभियान के लिए काम करना। समता कला जत्थे से जुड़ने से केवल शौक पूरा नहीं हुआ है, ज़िंदगी के नज़रिए में एक बदलाव आया है। महिलाओं की समस्याओं के प्रति जागरूक तो वह पहले से ही थीं। सोचती थीं कि क़ानून पढ़कर वकील बनेगीं और महिलाओं की समस्याओं को हल करने की कोशिश करेंगी। समता से जुड़ने के बाद एक नई इच्छा जगी है। समता और भारत ज्ञान विज्ञान समिति से जुड़ कर साक्षरता अभियान में काम करना चाहती हैं।

अनु और चंदन शर्मा क्रमशः कक्षा ग्यारहवीं तथा सातवीं कक्षा की छात्राएं हैं। अनु की मां एक महिला संस्था में काम करती हैं। कला जत्थे की भागीदारी के अनुभव ने उन्हें एक नई समझदारी

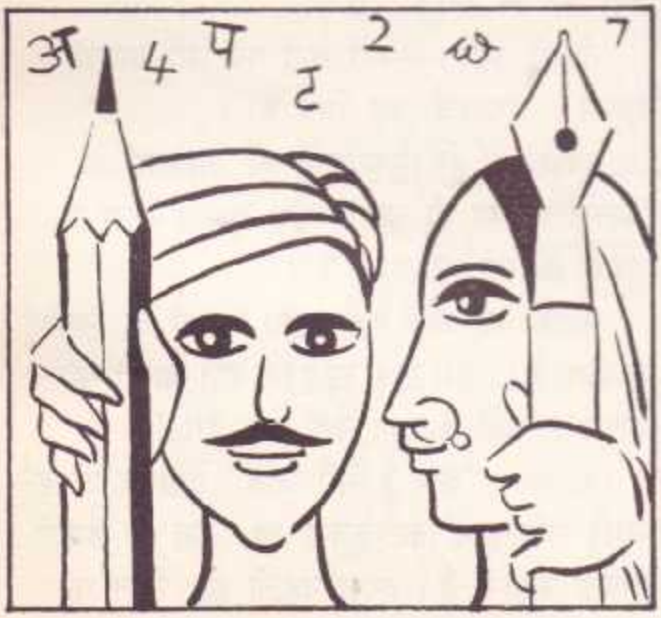

व जागरूकता दी है। नाटक करते करते एक दर्द महसूस किया है। अब उनकी अपनी दुनिया पुरानी जैसी नहीं रही है। चंदन शर्मा जब संवाद बोलती हैं "बहन के आंसू में देखी अपनी जात" पूरे संवेग से उस को महसूस करती हैं।

रूपा भट्टाचार्य कलकत्ते में बारहवीं कक्षा में पढ़ रही हैं। पश्चिमी बंगाल, बिहार, उड़ीसा के मिले-जुले कला जत्थे में शामिल थीं। ढाई वर्ष से बंगीय साक्षरता प्रसार समिति से जुड़ी हैं। जत्थे से जुड़ने का उद्देश्य और राज्यों के लोगों से मिलना नया अनुभव था। यह तो पूरा हुआ ही, ज़िंदगी के प्रति एक नई जागरूकता भी आई है। उड़ीसा, धनकेलि से शुरू हुई जत्थे की यात्रा उड़ीसा, प. बंगाल, बिहार होते हुए झांसी (उत्तर प्रदेश) तक अपने में एक अनुभवों का पिटारा लिए हुए है।

यह सिर्फ रूपा के लिए ही नहीं, जत्थे के तमाम भागीदार लगभग 150 नवोदित कलाकारों के लिए

एक बहुत गहरी तथा व्यापक अनुभूति का समय रहा है। देश के 8 अंचलों से चले कला जत्थे केरल, कर्नाटक, मध्य प्रदेश का जत्था, तमिलनाडू, मध्य प्रदेश का मिलाजुला जत्था, महाराष्ट्र, गुजरात व मध्य प्रदेश का मिलाजुला जत्था, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश का मिलाजुला जत्था, बिहार, मध्य प्रदेश का मिलाजुला जत्था, देश के 20 राज्यों की एक महीने की यात्रा करके ये सभी जत्थे 7 अप्रैल को झांसी पहुंचे। भागीदार कोई पेशेवर कलाकार नहीं है। साक्षरता अभियान से देश में महिलाओं की समस्याओं से, देश में शांति स्थापित करने की कामना से इन जत्थों में शामिल हुए।

उत्साह की नई लहर

हर जत्थे में तीन या चार पुरुष भी हैं। सब मिलजुल कर एक अभियान से जुड़े हैं। जहां जहां से ये जत्थे गुज़रे हैं लोगों में आशा और उत्साह की नई लहर पैदा हुई है। इन लहरों का दूर-दूर तक असर होगा। असर दूर-दूर तक हो तथा बना रहे इसके लिए अभी बहुत रास्ता तय करना है। अभी तो एक शुरुआत हुई है।

जहां जहां से इन राष्ट्रीय कला जत्थों को गुज़रना था पहले ही सांस्कृतिक कार्यक्रम, पोस्टर व पर्चियों तथा समूहों से बातचीत द्वारा इसकी जानकारी दी गई थी। जहां जहां कुछ महिला एवं सामाजिक समूह काम कर रहे हैं, साक्षरता अभियान चल रहे हैं वहां महिलाओं एवं आम लोगों की उपस्थिति ज्यादा थी। महिलाओं को भारी संख्या में सड़क पर निकल कर नाटक देखने के लिए आने में अभी समय लगेगा विशेषकर उत्तरी भारत के राज्य जैसे उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान आदि। फिर भी लोगों की प्रतिक्रिया व भागीदारी जत्थे का उत्साह बढ़ाने के लिए काफ़ी थी।

अनुभव

जत्थे के कुछ अनुभवों को बिना बताए हमारी बात अधूरी ही रह जाएगी। बिहार का चांडील गांव, रात के 9 बजे थे। गांव में साम्प्रदायिक तनाव था। जत्थे की प्रस्तुति थी "आज की रात हम जागते रहेंगें।"

औरत—मैं नहीं जाने दूंगी।

पति हाथ झटक कर ऐंठ कर चला जाता है। बाहर लोग उस पर उंगली उठाते हैं। यही है जो दंगे करवाता है। लोगों को मरवाता है। स्त्रियां आपस में मिलती हैं। कब तक हम दंगों का शिकार होते रहेंगें। कुछ स्त्री और पुरुष मिलकर आगे बढ़ते हैं।

एक औरत—मेरे 12 साल के बच्चे को गुंडों ने मार दिया।

दूसरी औरत—मेरी लड़की को वे मेरे सामने उठा कर ले गए।

तीसरी औरत—मेरी बेटी को मेरी आंखों के सामने... (फफक कर रोती है)।

दर्शकों में से सिसकियों की आवाज़, हां बिलकुल ऐसा ही हमारे साथ हुआ। जिस पर गुज़री है वही जानता है।

नाटक का अंत एक शांति कमेटी के निर्माण से होता है। "हम सब आज की रात जागते रहेंगें। अपने इलाकों में दंगा नहीं होने देंगें।"

नाटक—"क्या है मेरी जात" देखकर जगह-जगह महिलाओं का कहना था "यह तो हमारी अपनी कहानी है। आज पहली बार खुल कर

सबके सामने आई है।" उन्होंने पूरे ध्यान से नाटक देखे। आंखों में आंसू भी आए। अच्छे भी लगे। नए सवाल मन में लेकर वे वापस गईं। नाटकों के प्रदर्शन के दौरान पुरुष दर्शक ही ज्यादा थे। उन्होंने भी नाटकों को पसंद किया।

साक्षरता, समानता व शांति का संदेश, गीतों व नाटकों द्वारा लोगों तक पहुंचा।

औरत की पहचान

औरत—एक औरत जिसके लिए तुम्हारी बेहूदा शब्दावली में एक शब्द भी ऐसा नहीं जो उसके महत्व को बयान कर सके।

औरत—जिसके हाथों को दर्द की पैनी छुरियों ने घायल कर दिया है। एक औरत जिसका बदन अंतहीन कमर तोड़ मेहनत से टूट चुका है। एक औरत जिसकी खाल में रेगिस्तान की झलक दिखाई देती है। जिसके बालों से फैक्ट्री के धुएं की बदबू आती है। जो अपने मज़दूर भाइयों के कंधे से कंधा मिलाकर मैदान पार करती है। एक औरत जो मजदूर किसान की रचनाकार है।

औरत—मैं खुद भी मज़दूर, किसान हूं। एक औरत जिसके सीने में गुस्से से फफकते नासूरों से भरा एक दिल छिपा है। एक औरत जिसकी आंखों में आज़ादी की आग के लाल साए लहरा रहे हैं। एक औरत जिसके हाथ काम करते करते सीख गए हैं कि मुक्ति का झंडा कैसे उठाया जाता है।

जागो जागो जागो जागो जागो जागो

झांसी की रानी लक्ष्मी बाई—हमारा आदर्श, हमारी शान—के नगर में 8 और 9 अप्रैल को एक बड़ा सम्मेलन व रैली हुई। सम्मेलन में 500 से अधिक व रैली में हजारों की संख्या में महिलाओं ने भाग लिया। हमारा उद्देश्य है देश में पूर्ण साक्षरता, महिलाओं को समान दर्जा दिलवाना तथा देश में अमन और चैन फैलाना। आइए मिल कर वादा करें हम सब साझादारी, भागीदारी से इस काम को आगे बढ़ाएंगें।

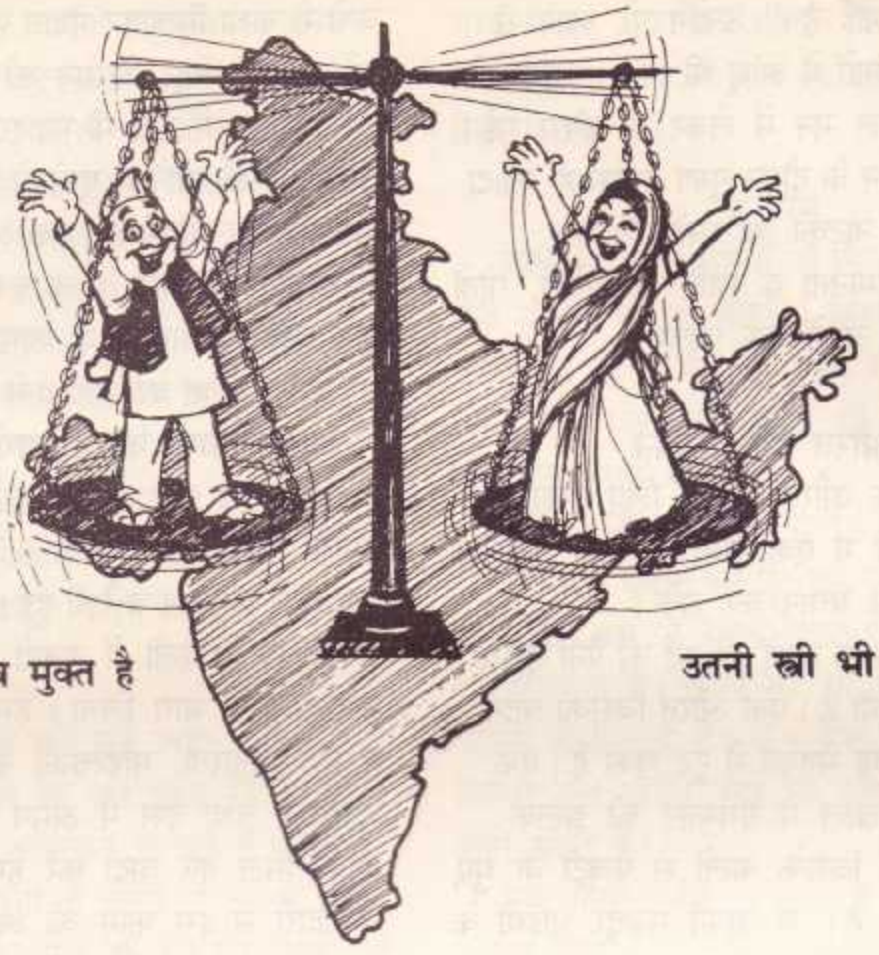

समानता पर स्थित समाज हमें चाहिए
जितना पुरुष मुक्त है, उतनी स्त्री भी चाहिए।
क्यूं जनम से इस तरह अछूत होती नारियां
पहला बेटा शुक्रिया, बेटी होती गालियां
नन्हीं मुन्नी बोझ कहते शर्म आनी चाहिए।

लड़का मांगता खिलौना, मिलती कार गाड़ियां
लड़की भी ललचाती, मिलता चूल्हा दूल्हा गुड़ियां

इस तर्कहीन फर्क से सतर्क होना चाहिए

डिग्रियां हासिल करने बेटा भेजा अमरीका
मेडिकल की फीस बढ़ते बंद पढ़ना बेटी का
पढ़ाई में न जॉब में, न फर्क होना चाहिए।

देखो बात शादी की, क्यों दिखाते लड़कियां
सजा के सबके सामने पेश करते पुतलियां
यह दो मिनट की पेशगी बंद होनी चाहिए।

शादी होते नाम भी बदले सिर्फ नारियां
क्यों सहे प्रधानता पुरुष की जहां तहां
प्रधानता की संस्कृति हमें कभी न चाहिए।

क्यों अकेले स्त्री ही पहने, शादी की परछाइयां
क्या बुरा, पुरुष पहने गहने और चूड़ियां
शादी-शुदा आदमी क्यों न जानना चाहिए
जितना पुरुष मुक्त है उतनी स्त्री भी चाहिए।

(बिहार से प्राप्त गीत—समता जत्था के दौरान प्रस्तुति—उड़ीसा, वेस्ट बंगाल बिहार जत्था)

एक नाटक की रूपरेखा

क्या है मेरी जात?

इस बार तो लड़का पैदा करना था। जानती हो न घर में कितनी तंगी है। अब एक और बोझ? बिना दहेज के इसे कैसे अपनी चौखट से उठाएंगे। लड़की हुई, अपने तो कर्म फूट गए।

जब मैंने जनम लिया धरती पर
कुछ भी नहीं थी जानती
पहली बात यही जानी कि
क्या है मेरी जात...

— क्या शोर मचा रखा है? लड़कियों को चुपचाप रहना चाहिए।
— क्या सिर्फ लड़कियों को शोर मचाना मना है?
— न खुद तमीज़ सीखी, न इनको सिखाएगी।

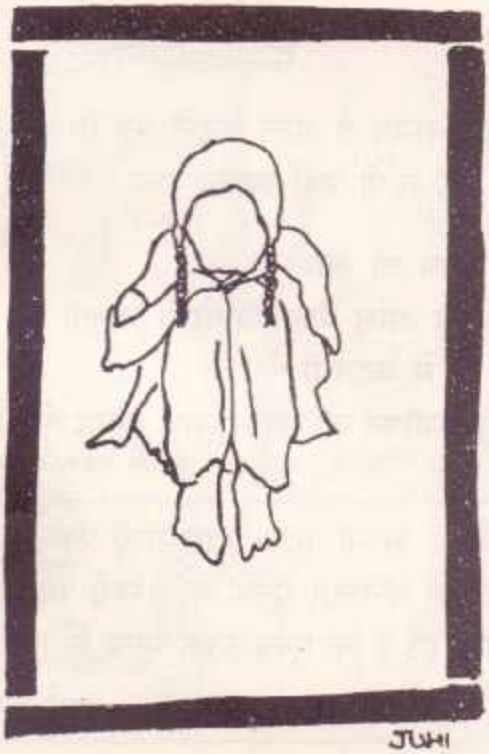

— क्या करती रहती हो सारा दिन, ऊपर से जबान लड़ाती हो।

धीरे-धीरे मैं पली बढ़ी
सहमी सहमी सी डरी डरी
जब देखा मां को पिटते हुए
जब अपमानित वो की जाती
पहली बात यही जानी कि
क्या है मेरी जात...

स्कूल में

भारतीय नारी का जीवन त्याग और निष्ठा का रहा है। वह अपना पूरा अस्तित्व मिटा देती है। उसे सीता, सावित्री, शीलवंती, लाजवंती, गुणवंती...
— लड़कों से ज्यादा मेलजोल ठीक नहीं, कुछ ऊंच नीच हो गया तो लड़की को ही भुगतना पड़ता है।

बहुत चाव था पढ़ने का
कुछ करने का कुछ बनने का
जब पहुंची विद्यालय के अंदर
हर कदम पे पाया अंतर
पढ़ना लिखना दुश्वार हुआ
एहसास ये बारंबार हुआ
कि क्या है मेरी जात...

ब्याह की तैयारी

— मेरी लड़की बी.ए. पास है
— वह सिलाई कढ़ाई जानती है।
— वह टाइप करना जानती है।
— वह घर के सब काम काज में निपुण है।
एक ही सवाल—क्या दोगे, क्या दोगे?

जब चेहरा उसका मुरझाया
डब डब आंखें भर आईं
तब बहिन के आंसू में देखा
क्या है मेरी जात?
तुमने नहीं पूछा ऐसा क्यों?
मैंने नहीं पूछा ऐसा क्यों?
किसी ने नहीं पूछा ऐसा क्यों?
क्यों नहीं पूछा ऐसा क्यों?

— माल अच्छा है।
— पूरा दहेज लिए बिना घर मत आना। अच्छी नारी शीलवंती, गुणवंती, लाजवंती, त्याग की देवी—सती-सावित्री।
— क्या ये इंसान नहीं हैं?
— क्या ये केवल उपभोग की वस्तु हैं?
— क्या ये हमेशा सहारा ढूंढती रहेंगी?
— क्या इनका अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है?
— क्या ये केवल माल हैं?
— नहीं, मैं भी इंसान हूं, बिलकुल तुम्हारी तरह।

— यही समय है प्रश्न उठाने का जिन्हें आज तक कभी नहीं उठाया गया।

आज समय वो आया है
जब आंसू पीड़ा खामोशी जलती हुई आग में बदलेगी।
एक सुंदर जीवन का सपना आज बनेगा वो अपना।

"समता" जत्थे द्वारा प्रदर्शित नाटक के कुछ अंश

> स्त्रियां अपना भाग्य स्वयं कहीं अच्छा बना सकती हैं बनिस्बत पुरुषों के। सारी गड़बड़ी इसलिए हुई है कि पुरुष उनके भाग्य के रचयिता बन बैठे हैं।
>
> —स्वामी विवेकानंद

हमारे हाथ में देकर देखो

"भैया, इस बार मुझे थोड़ी ज्यादा चीनी दे दो, मेरी बेटी की शादी है।"

"जाओ, जाओ। माल खत्म हो गया।"

"खत्म कैसे हो गया? मैंने तो अभी अपने हिस्से का राशन भी नहीं लिया। यह देखो।"

अलकांती मंगयम्मा ने अपना राशन कार्ड दुकानदार को दिखाया। दुकानदार पर भला असर क्यों होता। उसने एक बार फिर झिड़क दिया।

"कह दिया ना राशन खत्म हो गया। अगले सप्ताह आना।"

अलकांती दुखी होकर वापिस अपने गांव लौट आई। सस्ते राशन की दुकान महीने में तीन-चार दिन से ज्यादा खुलती ही नहीं थी। जब खुलती तब भी या तो पूरा राशन नहीं मिलता या फिर बिल्कुल ही नहीं।

सब गांववाले भी परेशान थे। जब दुकान खुलती ही नहीं तो इतनी जल्दी माल कैसे खत्म हो जाता है। मन ही मन सब जानते थे कि दुकानदार काफी माल धनी लोगों को पहुंचा देता है। बाकी काले बाजार में मंहगा बेच देता है। सवाल यह था कि करें तो करें क्या?

औरतों ने कमर कसी

सालों से दुकानदार यही गड़बड़ी कर रहा था। अलकांती ने अपनी सहेलियों से इस बात की चर्चा की। सब औरतों ने मिलकर राशन वाले की शिकायत करने का फ़ैसला किया। उनके गांव के पास ग्रामीण विकास के लिए काम करने वाली एक संस्था थी। यह संस्था शिक्षा, स्वास्थ्य, वानिकी और कृषि विकास जैसे कई मुद्दों पर काम

करती थी। संस्था गांवों में महिला मंडली भी चलाती थी।

अलकांती की सहेलियों ने इस महिला मंडली से बात की। उन्होंने अपने जिले की संस्था में जाकर बात उठाई। सब औरतों ने मिल कर ज़िला अधिकारियों से मांग की कि राशन की दुकान चलाने की जिम्मेदारी किसी औरत को सौंपी जाए। अधिकारी मान गए। दुकान महिला मंडली की कार्यकर्ता वीरम्मा को मिल गई।

एक नया रास्ता

यह सब नौ साल पहले हुआ था। तब औरतों ने कहा था कि तीन महीने के भीतर अंतर दिखलाई देने लगेगा। वही हुआ। आज नौ साल बाद भी वह दुकान वीरम्मा खूब सफलता से चला रही है।

शुरुआत के दिनों में कई परेशानियां आई। गांव के सरपंच ने वीरम्मा से ज्यादा राशन मांगा। उसने कहा "मैं सरपंच हूं। मुझे खुश रखना पड़ेगा, वरना दुकान नहीं चला सकोगी।" वीरम्मा ने मना कर दिया। सरपंच ने जिला अधिकारियों से वीरम्मा की शिकायत कर दी। उसने कहा कि वह माल काले बाजार में बेचती है। वीरम्मा की जांच हुई, सचाई सामने आ गई।

नई रुकावट

सरपंच ने फिर शिकायत की। इस बार कहा वीरम्मा हर एक किलो चीनी पर पच्चीस पैसे ज्यादा लेती है। वीरम्मा ने कहा "हां, यह सही है।" अधिकारियों ने दुकान पर ताला डाल दिया। वीरम्मा ने समझाया कि यह निर्णय महिला मंडली ने मिल कर लिया है। पैसे इकट्ठा कर के हम गांव की बिजली के बकाया आठ हजार रुपए चुकाएंगी। गांव की पंचायत ने कई साल से बिजली के पैसे नहीं भरे थे। नतीजा यह हुआ कि गांव की बिजली कट गई। हम चाहती हैं हमारे गांव में दोबारा बिजली चालू हो जाए। अधिकारी समझ गए। उन्होंने महिला मंडली की तारीफ ही नहीं की, सरपंच को चेतावनी भी दी।

सफर जारी है

अब भी छोटी-मोटी परेशानियां आती रहती हैं। वीरम्मा कहती है कि राशन पर मिलने वाला कमीशन बहुत कम है। दुकान चलाना मुश्किल हो जाता है। लेकिन बिना किसी फायदे के भी हम दुकान चलाएंगी। अब सबको अपने हिस्से का पूरा-पूरा राशन मिलता है। महीने में एक बार ही नहीं, बल्कि जितनी बार लेना चाहें ले सकते हैं। हम समझती हैं कि जिनके पास महीने भर का राशन खरीदने के पैसे नहीं होते, वे थोड़ा-थोड़ा ही लेंगे। आखिर घर की रोजमर्रा की समस्याओं को औरतों से ज्यादा और कौन समझेगा। गृहस्थी चलाने वाली औरत दुकान क्या, सरकार भी चला सकती है।

एक अकेली क्या नहीं कर सकती!

वीणा शिवपुरी

गांव में, शहर में, पढ़ी-लिखी या निरक्षर बहुत-सी औरतें कहती हैं एक अकेली क्या कर सकती है? उसके जवाब में यही कहना चाहिए—

"एक अकेली क्या नहीं कर सकती।"

जमूरी ने की अगुवाई

राजस्थान के एक गांव की इस सीधी-सादी, दुबली-पतली औरत की कहानी जिस किसी ने सुनी उसने भी यही कहा। दस साल पहले जमूरी विधवा होकर अपने मां-बाप के घर लौट आई थी। तबसे वह अलवर के पास गुवड़ा कलोट नाम के छोटे से गांव में रहती है। इस इलाके में बहुत कम बारिश होती है और वह भी कहीं-कहीं बिलकुल नहीं।

जमूरी के गांव में भी सूखा पड़ रहा था। उस इलाके में काम करने वाली एक स्वयं सेवी संस्था ने जगह-जगह जोहड़ बना कर बारिश के थोड़े बहुत पानी को रोकने की योजना बनाई। उनका कहना था इस तरह से धीरे धीरे वहां जमीन के नीचे के पानी का स्तर ऊंचा उठेगा। सारे गांव ने मुफ्त मेहनत करने का वादा किया। जिस दिन काम शुरु होना था वहां सिवाय जमूरी के कोई नहीं पहुंचा।

एक अकेली

जमूरी ने यह नहीं कहा कि "मैं अकेली क्या कर सकती हूं?" या "जब बाकी लोग कुछ नहीं करना चाहते तो मैं क्यों करूं?" जमूरी लगन की पक्की औरत थी। बस, अकेली ही जुट गई। मिट्टी खोदती, तगारी भर के उठाती और जोहड़ की जगह डालती। फिर मिट्टी खोदती, तगारी भर के उठाती और जोहड़ की जगह डालती।

कहते हैं कि चिड़िया समुद्र खाली नहीं कर सकती लेकिन इस चिड़िया ने तो समुद्र खाली करके दिखला दिया।

एक दिन बीता, दो दिन बीते, सप्ताह बीते। जमूरी अकेली काम में लगी रही। बयालीस दिनों में जमूरी ने अपने दो हाथों से मिट्टी की ऊंची मज़बूत दीवार खड़ी कर दी। जमूरी की मेहनत और उस साल की बारिश ने गांव के लिए पानी भरा जोहड़ तैयार कर दिया।

ये सब क्यों किया

जब लोगों ने पूछा कि भला तूने इतना सब क्यों किया तो जमूरी का भोलाभाला उत्तर था, मेरे गांव के लिए।

इस सरल उत्तर में कितनी बड़ी सचाई छुपी है। हममें से कितने दूसरों के लिए कुछ करते हैं। अगर लोग यूं ही अपने मुहल्ले, अपने गांव, अपने देश और अपनी दुनिया के लिए थोड़ा-सा भला काम करने लगे तो यह संसार कितनी खूबसूरत जगह बन सकती है। सिर्फ़ ज़रा सोचने की ज़रूरत है। जब जमूरी अकेली अपने गांव के

लोगों और जानवरों की जान बचा पाई तो हम सब कुछ क्यों नहीं कर सकते।

सिर्फ़ इतना ही नहीं

जमूरी की कहानी यहीं खत्म नहीं होती। उसके बनाए जोहड़ की मिट्टी की दीवार तेज़ी से बहते पानी से टूट न जाए इसके लिए एक और दीवार बनानी थी।

अब तो सारा गांव मदद को तैयार था। फिर भी जमूरी सबसे आगे बढ़ी। उसने बाकी लोगों से दस दिन ज्यादा काम किया। जब स्वयं सेवी संस्था के लोगों ने उसे पैसे देने चाहे तो जमूरी ने साफ़ मना कर दिया। मैंने ये सब पैसे के लिए नहीं किया।

जमूरी के गांव में शराब की लत ने भी घर कर रखा है। आज वो शराबखोरी को दूर करने में लगी हुई है। धरने देती है, भूख हड़ताल करती है पर अपने गांववालों को शराब पीने से रोकती है। आज भी उसकी प्रेरणा वही है। "मेरे गांव के लोगों का सर्वनाश हो रहा है तो मेरा फर्ज है कि मैं कुछ करूं।"

स्वयं सेवी संस्था ने पिछले चार सालों से लगातार वहां जंगल बचाओ यात्रा का आयोजन किया है। उसमें हमेशा जमूरी ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। उसने अपने घर के पास बारह पीपल और बड़ के पेड़ लगाए हैं और आसपास की पहाड़ी पर पचास ढाक और ढाकड़ के पेड़। उसे देख कर अब सब लोग पेड़ लगाने और पेड़ बचाने के काम में जुड़ने लगे हैं।

जमूरी गांव में औरतों की समस्याओं से भी जुड़ती है। कितने ही घरों की बेटियां बचपन में ब्याहने की बजाए आज पढ़ने स्कूल जा रही हैं।

अब वो खुद भी पढ़ना लिखना सीखना चाहती है। जरूर एक दिन उसका यह सपना भी पूरा होगा।

जमूरी ने पाया मान

जमूरी पूरे गांव में एक मिसाल है। अनपढ़, गरीब, अनजान औरत जरूर लेकिन कितनी समझदार, कितनी हिम्मती। उसकी हिम्मत को सभी ने सराहा। उस इलाके की स्वयं सेवी संस्था ने उसे "पर्यावरण प्रेमी पुरस्कार" से सम्मानित किया। इन सबने जमूरी पर कोई असर नहीं डाला। आज भी वह अपनी दस बकरियों, चार भैंसों और दो गायों को पालती है। मेहनत कर के अपना पेट भरती है और अपने गांव के लिए कुछ भी करने में सदा आगे रहती है। □

अब हर पंचायत में औरतें होंगी

मणिमाला

हम औरतें पिछले कितने सालों से लड़ रही हैं समाज में अपनी पहचान बनाने के लिए। हम चाहते हैं कि हम सिर्फ़ पुरुषों द्वारा बनाए गए समाज में न रहें। बल्कि समाज बनाएं भी। यह सच है कि कई मोर्चे पर हम कमजोर पड़े हैं। हमारी किसी ने नहीं सुनी है। लेकिन कई मोर्चों पर हमारी लड़ाई इतनी मजबूत रही है कि हमने सुनने के लिए बाध्य कर दिया है।

विरोध

राजनीति में महिलाओं की सक्रिय और समझदार भागीदारी पिछले कुछ सालों से कम होने लगी थी। पार्टी के लोग औरतों को चुनाव लड़ने के लिए टिकट नहीं देते थे। अगर किसी तरह टिकट मिल भी जाता था तो लाठी और गुण्डों के बीच औरतों का जीतना बड़ा ही मुश्किल हो जाता था। उनके पुरुष प्रतिद्वंव्दी आखिरी हथियार के तौर पर मनगढ़न्त कहानियों का सहारा लिया करते हैं। उनका चरित्रहनन करते हैं। औरतों के चरित्र से जोड़ कर चाहे जितनी झूठी कहानी बनाई जाए, लोग उसे सच्ची कहानी मान लेते हैं। फिर खराब औरत समझ कर वोट नहीं देते। फिर भी औरतें मैदान से पीछे नहीं हट रही हैं। गांव-गांव में पंचायत चुनाव में औरतें हिस्सा ले रही हैं। मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में तो दो पंचायतों की सभी सदस्य औरतें हैं।

महाराष्ट्र में पहल

औरतों के इस संघर्ष और जीवट को देखते हुए दो साल पहले महाराष्ट्र सरकार ने कानून बना कर सभी पंचायतों, जिला परिषदों और नगरपालिकाओं में औरतों के लिए एक तिहाई जगह आरक्षित कर दी थी। जब यह कानून बनाया गया तो कई लोगों ने खूब विरोध किया। वे नहीं चाहते थे कि औरतें समाज चलाने में भी हिस्सा लें। कई लोगों ने ललकारा भी कि अगर वे समाज चलाना चाहती हैं तो अपनी कूव्वत पर आगे आएं। कुछ लोगों ने यह शंका भी जाहिर की कि अगर वे पंचायत में बोलने लगीं तो घर में भी बोलने लगेंगी। आज आरक्षित सीटों पर खड़ी होकर जीतेंगी तो कल सामान्य सीटों से भी जीतने लगेंगी। उन्हें समाज चलाना आ जाएगा तो वे बाद में विधान सभाओं और संसद में भी जाने लगेंगी।

विरोधों के बावजूद महाराष्ट्र में पंचायत और

पालिका चुनाव हुए। तीस प्रतिशत जगहों पर महिलाएं चुन कर आईं। पहली बार इतनी संख्या में आईं। घर से बाहर की समस्याओं को समझाना शुरू किया और अपने आत्मविश्वास को बढ़ाया।

उड़ीसा में कानून

पिछले वर्ष उड़ीसा सरकार ने भी कानून बदला। वहां भी ग्राम पंचायत, जिला परिषद और नगरपालिकाओं में औरतों के लिए एक तिहाई जगह आरक्षित की गईं। साथ ही यह कानून भी बना कि अगर किसी पंचायत का सरपंच पुरुष होगा, तो उप-सरपंच के पद पर औरत ही चुनी जाएगी। इसका भी खूब विरोध हुआ। महाराष्ट्र से भी ज्यादा विरोध हुआ। तीन बार चुनाव टालने पड़े। चौथी बार तय की गई तारीख पर वहां चुनाव हो सका।

लोग कहते थे कि औरतों के लिए जगह आरक्षित तो कर दी गईं लेकिन चुनाव लड़ने के लिए इतनी सारी औरतें आएंगी कहां से? लेकिन यह आशंका सच नहीं निकली। औरतें पंचायत में शामिल होना तो पहले से ही चाह रही थीं। लाठी और पैसे के आगे उनकी यह इच्छा धूल बन कर उड़ जाती थी। जब एक चुनाव क्षेत्र में केवल महिलाएं ही रह गईं तो लाठी और पैसे का जोर जरा कम हुआ। एक एक चुनाव क्षेत्र में आठ से दस महिलाएं खड़ी थीं। दुर्भाग्य यह कि विरोधियों ने चुनाव के दौरान भी विरोध जारी रखा। वे हिंसा पर भी उतर आए। इस चुनाव के दौरान 17 जन मारे गए थे और 50 से ज्यादा लोग घायल हुए थे।

औरतों की सफलता

औरतों ने पंचायत में इतना बढ़िया काम किया कि अब उनका कोई विरोध नहीं है। महाराष्ट्र और उड़ीसा में इस प्रयोग की सफलता को देखते हुए अब केंद्र सरकार ने भी पंचायत कानून में सुधार लाने के लिए एक विधेयक तैयार किया है। इसमें कहा गया है कि अब हर राज्य की हर पंचायत, जिला परिषद और नगरपालिका में एक तिहाई सीट पर केवल औरतें ही चुनाव लड़ेंगी। अगर यह कानून संसद के इस सत्र में पेश कर दिया गया। और पास हो गया तो हम औरतों के लिए समाज संचालन में भागीदारी के नए अवसर मिलेंगे। अपनी रचनात्मक शक्ति का इस्तेमाल कर पाएंगे। हम बता सकेंगे कि हम किसी से कम नहीं। हमारी ही लगातार लड़ाई का नतीजा है यह। □

जनआंदोलन की सफलता

आंध्र प्रदेश सरकार ने पूरे राज्य में शराब की बिक्री पर रोक लगा दी है। पहली अक्टूबर '93 से जब उनका नव-कर वर्ष शुरू होता है यह लागू हो जाएगा। लेकिन नैल्लौर ज़िले में जहां से अरक विरोधी आंदोलन की शुरुआत हुई थी यह तुरंत लागू होगा। राज्य के मुख्य मंत्री ने यह घोषणा करते हुए बताया कि यह ग्रामीण तथा शहरी दोनों इलाकों में लागू होगा। उन्होंने यह भी बताया कि शराब की बुराइयों के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए एक समिति का भी गठन किया जा रहा है। तमिलनाडू और गुजरात राज्यों में शराब की बिक्री पर प्रतिबंध पहले से ही लागू है।

यह स्वैच्छिक महिला संगठनों की भी विजय है जिन्होंने इस आंदोलन का मार्ग दर्शन किया और इसे एक दिशा दी।

अप्रैल-मई, 1993

सिलसिला यूं रुकेगा

छतरपुर जिले के नौगांव थाने में दो महिलाओं के साथ कथित सामूहिक बलात्कार दिल को दहला देने वाली घटना है। यह समस्त नारी जाति का अपमान है। समाज की रक्षा करने वाले रक्षक स्वयं भक्षक हो जाएं, तो भला हम सच्चे न्याय की क्या आशा करेंगे? मात्र पुलिस कर्मी को निलंबित करने से काम नहीं चलेगा। कठोर दंड दिये जाने पर ही यह सिलसिला रुक सकता है।

कुछ तीखे सवाल

विडंबना ही है कि एक ओर तो हम नारी की देवी के रूप में स्तुति करते हैं। समान अधिकारों की बात करते हैं, दूसरी ओर नारी का उत्पीड़न भी चरम-सीमा पर है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण इस प्रकार है—ग्राम गुराड़िया (भीकनगांव) में महिला को निर्वस्त्र घुमाने की घटना दिल को दहला देने वाली है।

जांच भी होगी, कारण भी खोज लिए जाएंगे, संबंधित व्यक्ति, अधिकारीगण कुछ समय की लीपा-पोती के बाद में अपने-अपने कार्यों में पुनः व्यस्त हो जाएंगे। पत्रकार भी दूसरी सनसनीखेज खबर ढूंढने में लग जाएंगे।

उस महिला के बारे में सोचिए जिसका चीरहरण सार्वजनिक रूप से हो चुका है और जिसे बचाने कोई कृष्ण नहीं आया। क्या उसे फिर सामान्य जीवन जीने का अवसर मिलेगा? जिस देश में लज्जा ही आज की नारी का सब कुछ है, उसी से वंचित हो चुकी उस नारी का भविष्य क्या होगा? क्या उसे समाज के ताने नहीं सहने पड़ेंगे? क्या उसके बच्चों को इस घटना की चर्चा चाबुक के समान नहीं लगेगी? क्या पुरुष-प्रधान समाज के दृष्टिकोण में बदलाव आएगा।

यह सब प्रश्न नारी जाति एवं नारी समाज पर एक प्रश्न चिह्न छोड़ जाते हैं। इसे मिटाने के लिये संपूर्ण नारी जाति को एकजुट हो कर इसका सामना करना है ताकि नारी जाति पर हो रहे अत्याचारों का अंत हो सके।

विद्या सोनी

सुनो आताताइयो!
अपने खूनी पंजों से
औरत का अस्तित्व मिटाने वाले
सृजन की संरक्षिका को लहूलुहान करने वाले
उसकी जायदाद को ज्यादती कर निगलने वाले
यह अत्याचार यह नापाक इरादे
बहुत हुआ, अब हम जाग उठे हैं
देख रहें हैं अन्याय, शोषण औ' बलात्कार
हम नहीं चाहते अतीत को दोहराना
आज बीता हुआ इतिहास हमें है ललकारता
अपना हक पाने के लिए लक्ष्मी बाई को है पुकारता

—शोभा कुमारी

महिला सरपंच का पूर्ण साक्षर गांव—समोदा

जिला दुर्ग (मध्य प्रदेश) के समोदा गांव की एक नहीं, कई खासियतें हैं। 2000 की आबादी वाला यह छोटा सा गांव तेजी से विकास की ओर बढ़ रहा है। यहां सब साक्षर हो चुके हैं।

गांव मुख्य मार्ग से पक्की सड़क से जुड़ा है। गांव में बिजली है। कुष्ठ रोगियों की अच्छी देखभाल की जाती है। रोग से मुक्त लोगों की संख्या 15 है। गांव में अपना कोई बैंक नहीं है, लेकिन पास के राजनांद गांव व सिरसा से ज़रूरी कर्ज़ा मिलता रहता है। गांव में परिवार-नियोजन भी काफी समय से है। गांव में इसीलिए खुशहाली है।

समोदा गांव में कभी झगड़े नहीं हुए। कोई पार्टीबंदी नहीं है। सब मिलजुल कर सहयोग से काम करते हैं। ऐसा कैसे मुमकिन हुआ?

महिला सरपंच

यहां कुल 11 पंच हैं जिनमें 3 महिलाएं व 8 पुरुष हैं। इनकी सरपंच है 32 वर्षीय श्रीमती गनेसिया बाई। वे आठवीं तक पढ़ी हैं। गांव में पली-बढ़ी, सीधी-सादी, मेहनतकश महिला एक खास शक्ति से प्रेरित हैं।

सेवाभाव व परिश्रम के हथियारों से लैस, तीन बच्चों की मां घर-गृहस्थी, खेती-किसनई करने के बाद भी गांव की अगुआ बन कर उभरी हैं। उनके पति छठी कक्षा तक पढ़े हैं। शादी के पांच बरस बाद गनेसिया बाई ने सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया।

गांव में पल बढ़कर और शक्ति अर्जित कर जब कोई गनेसिया बाई जैसी बेटी या बहू आगे आती है तो बात बनती है। गांव के उप-सरपंच मैतूराम सतनामी का भरपूर सहयोग है। भूतपूर्व मालगुज़ार श्री ताम्रकार ने अपनी इच्छा से उदारतापूर्ण 20 एकड़ जमीन सड़क से गांव को जोड़ने के लिए दी। यही कारण है कि चौमासे में बिलकुल कट जाने वाले गांव समोदा में अब बारहों महीने ट्रक दौड़ते हैं।

कुष्ठ रोगियों की सेवा

शिविर लगाकर तेल और पानी की चिकित्सा से घाव को बाकायदा छूकर और मरहम पट्टी लगाकर कुष्ठ रोगियों को ठीक किया जा रहा है। कुष्ठ रोगी समाज के अछूत व्यवहार से भीतर तक आहत हो जाता है। गनेसिया बाई ने इस मर्म को पकड़ा है। इसलिए उन्हें हर क्षेत्र में सफलता मिली है।

गांव में राजनीति की कमी नहीं है, मगर गनेसिया बाई को किसी तीन तेरह या उठापटक से कोई सरोकार नहीं है। उन्होंने घर घर जाकर लोगों को साक्षरता के प्रति जागरूक किया है।

सिरसा के ग्रामीण बैंक के प्रबंधक श्री राजेंद्र मिश्रा का पूरा सहयोग गांव वालों को मिला हुआ है। समोदा गांव बैंक की कर्जा अदायगी और खेती के उन्नत तरीकों की पहल में प्रथम स्थान रखता है।

परदेशी राम वर्मा
भिलाई (म.प्र.)

अन्यायी न्याय

हो अन्यायी न्याय तो कैसे सहा जाए
बाड़ खेतों को खाए तो कैसे सहा जाए

मामले घरों के निजी क़ानून में आएं
मर्दाने धर्मों के इन पर हैं साए
ये सारे औरत को दबाएं
खुद न्याय दबाए, ये कैसे सहा जाए

परिवार का मुखिया पति क्यों कहाए
बच्चों पर हक़ भी पिता ही क्यों पाए
न्याय कहना इसे है अन्याय
ऐसा उल्टा हो न्याय—ये कैसे सहा जाए

जायदाद आधी कहीं आधी गवाही
मर्दों को चार शादी हमको मनाही
दोगले क़ानून और कितने गिनाए
खुद अन्धा हो न्याय—ये कैसे सहा जाए

न्याय कराने जो जज साहब आए
मर्दाना चश्मा हैं वो भी चढ़ाए
पितृशाही पुलिस भी चलाए
न्याय कहीं हम न पाएं—ये कैसे सहा जाए

सहने को रहने दें कहने पे आएं
कोर्ट कचहरी के धोखे न खाएं
क़ानून मर्दाने अब ना चलाएं
नए क़ानून बनाएं तो बड़ा मज़ा आए
कोई आधा न पाए—तो बड़ा मज़ा आए
कोई ज़्यादा न पाए—तो बड़ा मज़ा आए।

—कमला भसीन

भंवरी

सुनो सुनो रे कहानी एक साथिन की,
एक भंवरी की
सपनों के एक नाविक की,
सुनो सुनो रे कहानी...

एक सपना प्यारा था उसका
गांव बने न्यारा उसका
वह घर-घर जाती
दर-दर जाती
प्यार से सबको समझाती...

छोटे बच्चों को ब्याहो मत
उनके बचपन को बेचो मत
जी भर उनको खिलने दो
शक्ति भर उनको उड़ने दो
पूरा इनको पढ़ने दो
जो चाहें सो करने दो...

एक जागृत गांव हमारा हो
एक बेहतर गांव हमारा हो...
बस यही एक तो सपना था
पूरा गांव ही उसका अपना था...

का सपना

मणिमाला

आज अकेली पड़ गई वो
अपने ही लोगों के बीच
आज सभी कहते हैं उसको
'झूठी' है वो, है वो 'नीच'
क्या 'अपराध' किया भंवरी ने?
क्यों फंस गई भंवर के बीच?
अपना गांव भटेरी है उसका...
सालों काम किया अपनों के बीच
वे अपने ही हुए पराए आज
कहते हैं—भंवरी गांव छोड़ कर जाए आज

बहिष्कार हुआ उसका
रोजगार गया उसका
क्या 'अपराध' हुआ भंवरी से?
क्यों गांव नाराज हुआ भंवरी से?

भंवरी उनसे घिरी हुई है
दुख से अपने भरी हुई है
मिट्टी के बर्तन गढ़ती थी
उससे कुछ अर्जन करती थी
उसी से जीवन चलता था
पेट परिजन का पलता था

भंवरी जीवट वाली औरत है
अपनी हिम्मत, अपनी मेहनत—
बस, यही तो उसकी दौलत है
भंवरी की हिम्मत-मेहनत से
गांव के "दादा" दो नाराज हुए

भंवरी को सबक सिखाने को
अपनी फौज लिए तैयार हुए
भंवरी पर दो बलवानों ने
अत्याचार किया
व्यभिचार किया
बलात्कार किया...

भंवरी ने डट कर उनका भी प्रतिकार किया
प्रतिसाद किया
प्रतिवाद किया

एक औरत की ऐसी हिम्मत रास न आई
कहने लगे—झूठी है लुगाई
धमकी पर धमकी मिलती रही—
"आरोप तुम अपना वापस लो
'अपराध' अपना स्वीकार करो

फिर कभी जुंबा ना खोलोगी
यह शर्त भी तुम स्वीकार करो
अहसास करो, तुम औरत हो
औरत होने का पश्चाताप करो"

भंवरों के बीच खड़ी भंवरी
अपनों से दुखी हुई भंवरी
पर, हिम्मत कर वह कहती रही, "कभी नहीं—
झुकने की कोई बात नहीं
जिसकी सुनहरी सुबह न हो,
ऐसी कोई काली रात नहीं—

भंवरी नहीं झुकी है, नहीं झुकेगी
खुल कर अपनी बात कहेगी
पति साथ है, बच्चे साथ—
साथिन भी हैं सारी साथ

भंवरी खड़ी रहेगी सच के साथ—
हम सब होंगें भंवरी के साथ

आओ संकल्प करें हम आज
कभी नहीं छोड़ेगे साथ—

हर गांव में भंवरी रहती है
हर गांव की भंवरी लड़ती है
हर गांव की भंवरी लड़ते-लड़ते
यूं ही भंवर में फंसती है

हर भंवरी को संग जुटाएं हम
एक नहीं, अनेक हैं हम
मरने तक लड़ते हैं हम
हम सबके अन्दर

एक-एक भंवरी है
जो कभी न दुख से
सहमी है...
भंवरी के साथ लड़ेंगे हम
साथ नहीं छोड़ेंगे हम...

अबला से सबला बनी

डा. शकुंतला जैन

पेश है एक सहेली की गाथा। नाम है सुखिया यादव। दुर्ग जिले के सर्गी गांव में जन्म हुआ। चार साल की उम्र में पंचम नामक पुरुष से शादी कर दी गई। 14 साल की उम्र में गौना हुआ। दोनों पति-पत्नी मजूरी करने जाते।

घर-गृहस्थी चलती रही। देखते देखते 15 साल बीत गए। सुखिया 4 लड़कियों की मां बनी। लड़का न होते हुए भी उसने आपरेशन करा लिया। उतना ही परिवार संभालना कठिन था। धीरे-धीरे पंचम को रोज दारू पीकर आने, गाली-गलौज और मारपीट की आदत पड़ गई। घर में वह खर्चा नहीं देता। उल्टे उससे दारू के लिए पैसे मांगता।

तंग आकर सुखिया गांव छोड़कर शहर आ गई। पति गांव में ही रह गया। सुखिया ने मुझसे मदद मांगी। वह घर में कामकाज करने लगी। उसने पढ़ना-लिखना भी सीखा। दिमाग पहले से ही अच्छा था। और तेज़ हो गया। सीखा हुआ पाठ घर जाकर लड़कियों को पढ़ाती। दो बड़ी लड़कियां अच्छे घरों में काम करतीं। तीसरी 8 साल की बच्ची छोटी चार साल की बच्ची को संभालती।

तीन साल बीते। जिन घरों मे काम करती थी उनकी मदद से दो बेटियों का ब्याह किया। सुखिया को सुख-संतोष नसीब हुआ। अब तीसरी बेटी चौथी में व चौथी बेटी प्राइमरी कक्षा में पढ़ रही है। कहती है दोनों को मैट्रिक तक पढ़ाउंगी। पढ़ी-लिखी न होने की वजह से बड़ी तकलीफ उठाई है।

इसी माह फरवरी '93 में उसने एक झोपड़ी खरीदी है। साल भर की पगार अगाड़ी लेने से यह काम हो पाया। थोड़ी सी मदद, थोड़ी मेहनत और सही मार्गदर्शन से एक ग्रामीण स्त्री आत्म-निर्भर बन गई। चार-पांच साल में वह इतने सब काम कर सकी। मदद करने वाली बहनों को मिला पुण्य और आत्मिक संतोष। यह भी नारी की उन्नति का एक मार्ग है। □

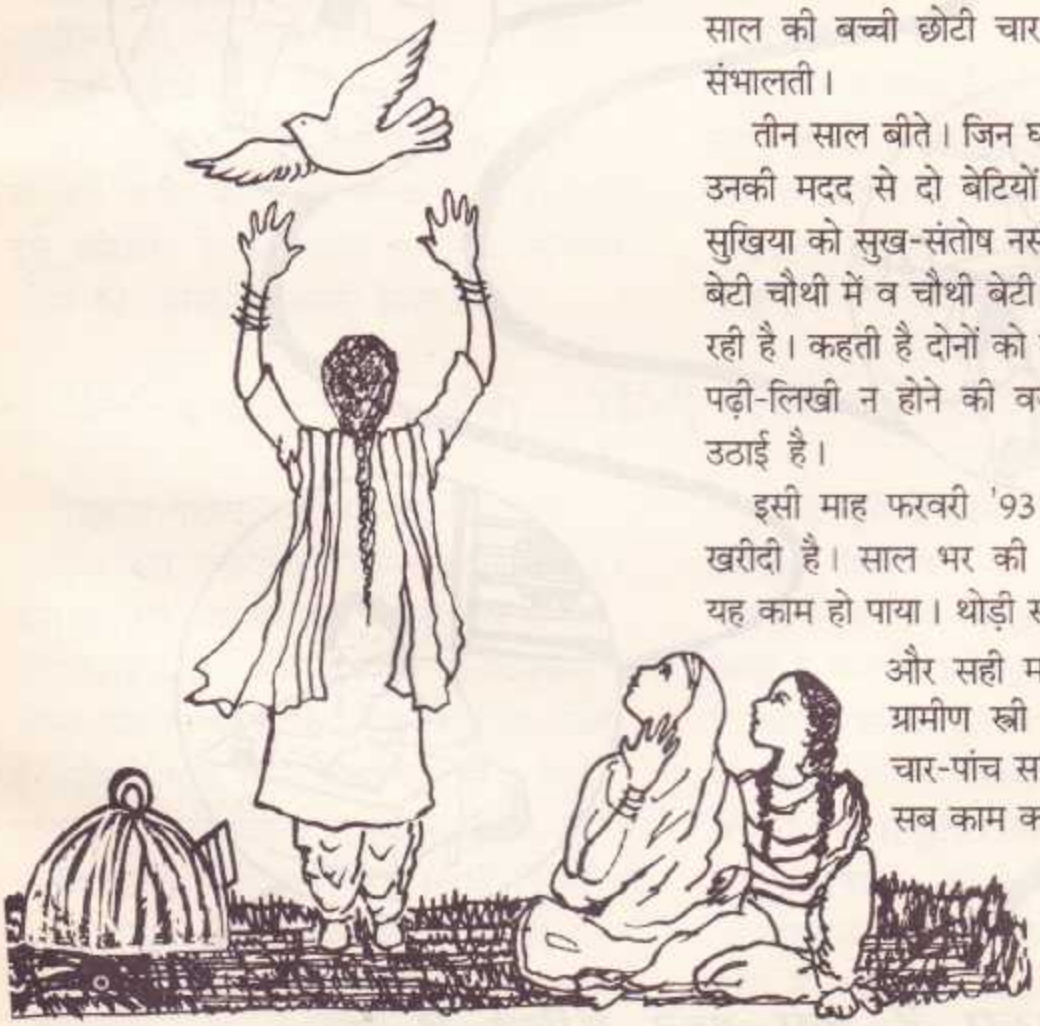

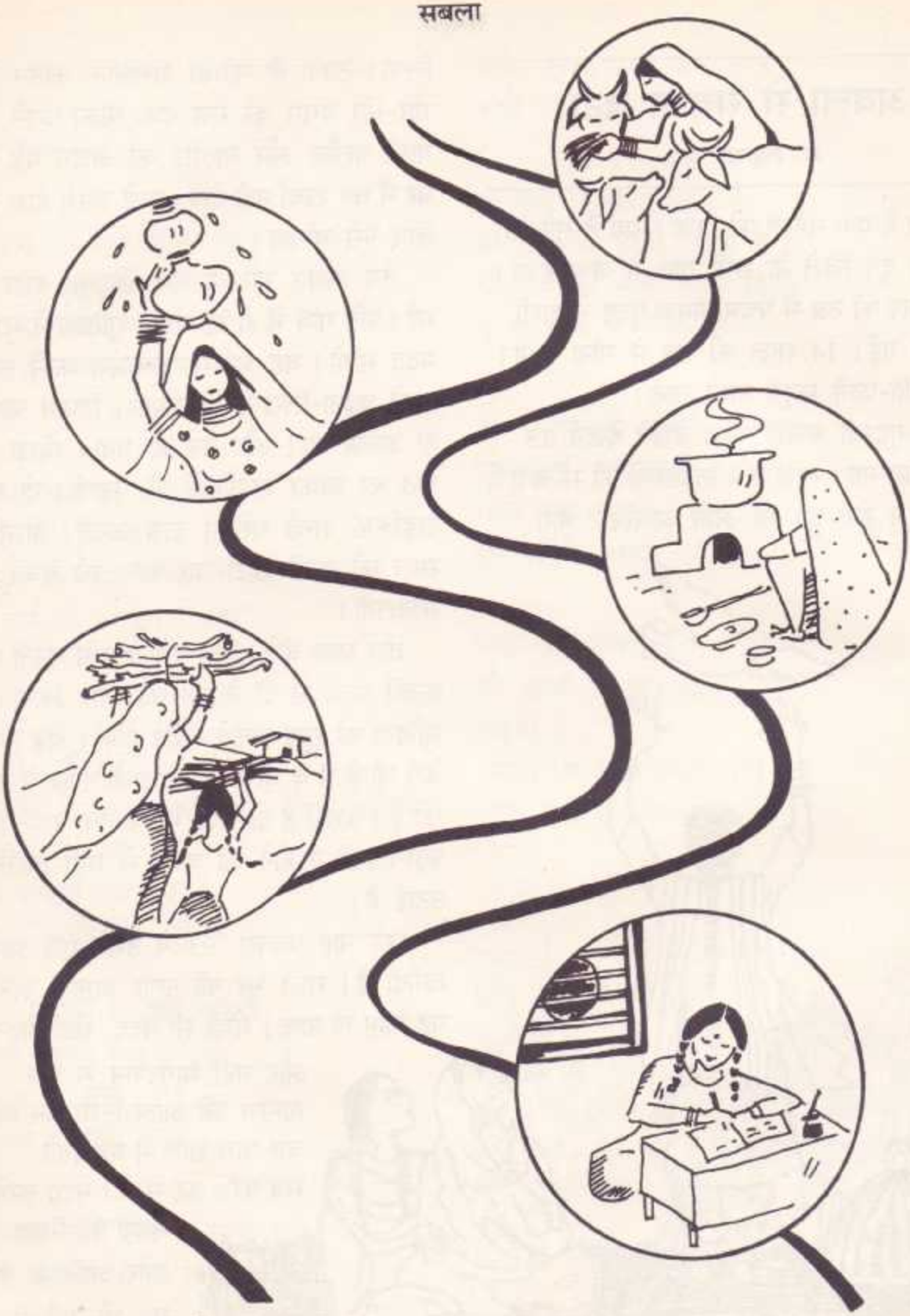

रास्ता है लंबा बहन मंजिल है दूर

जल, जंगल, ज़मीन पर हमारा हक

सुहास कुमार

पिछले दस सालों से मध्य प्रदेश के छत्तीसगढ़, मालवा, बुंदेलखंड, मध्यभारत आदि क्षेत्रों में कई स्वयंसेवी संगठनों और संस्थाओं ने जंगल और जमीन पर लोगों के अधिकार को लेकर एक जबरदस्त संघर्ष छेड़ा है। पिछले तीन सालों में "एकता परिषद्" संगठन ने इसे एक व्यापक जन आंदोलन का रूप दिया है।

यहां अधिकतर किसान भूमिहीन हैं। जमींदारी उन्मूलन सीलिंग कानून लागू होने के बावजूद न तो उन्हें जमीन पर कब्जा मिला है, न ही पट्टा। इस आंदोलन से कई जगहों में गरीब, भूमिहीन लोगों को जमीन पर कब्जा मिला।

एक अहम सवाल ?

"एकता परिषद" का मकसद सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक विकल्प बनाना भी है। कौन से तरीके अपनाए जाएं जिससे गांव के सब लोग फायदा उठा सकें। जमीन पर सामूहिक कब्जा कायम रखने के लिए क्या किया जा सकता है? सबको पानी मिले, वैकल्पिक ईंधन मिले ताकि जंगलों को बचाया जा सके। भूमि से जुड़ी समस्याओं एवं उन्हें हल करने संबंधी विषयों को लेकर सितंबर '92 में एक कार्यशाला की गई जिसमें मध्य प्रदेश के तमाम जिलों के "एकता परिषद" के कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया।

संभावित विकल्प

दुर्ग के गोकरण जी ने जो कई सालों से पट्टे के संघर्ष से जुड़े हुए हैं, बताया कि पट्टे के लिए सरकारी दफ्तरों के आगे विरोध और घेराव से ज्यादा महत्वपूर्ण है गांववालों की सोच और समझ बढ़ाना।

कुमारी बिरिया ने बताया कि गरीबों के पास बहुत ही कम जमीन है और संसाधन बिल्कुल ही नहीं। वे बीजों के लिए जमींदारों पर ही निर्भर करते हैं। कई जगह जहां किसानों को एक जगह जमीन दी, कुछ दिनों में सामूहिक खेती नहीं चल पाती है।

गोचर भूमि के उपयोग के अधिकार की चर्चा की गई। मेंहदी लाल यादव ने बताया कि उन्होंने गांववालों के साथ मिलकर एक चेक बांध तैयार किया है जिससे करीब 100 एकड़ जमीन की सिंचाई हो सकती है। धार जिले की सीता बहन का कहना था कि गांववाले जब तक अपनी ज़रूरत नहीं समझेंगें, तब तक हमारे लिए कुछ कर पाना संभव नहीं है।

जबलपुर के रीठी ब्लाक में काम कर रही चंदा बहन ने बताया कि किस प्रकार यहां के पटवारी गरीब किसानों को जमीन के मामलों में परेशान

कर रहे हैं। लाल मिट्टी में सिर्फ धान की फसल हो सकती है लेकिन पानी की कमी की वजह से यह भी मुश्किल से हो पाती है। अकसर ही कम बारिश की वजह से सूखा पड़ जाता है। जमीन भी समतल नहीं है।

सभी सहयोगी भागीदार भाटापाड़ा गए। वहां 66 भूमिहीन परिवारों को 146.57 एकड़ जमीन दी गई। वहां "एकता परिषद" 50 एकड़ वनों की भूमि का संरक्षण भी कर रही है।

कठिनाइयां

गांववालों ने बताया कि अभी भी सिंचाई की समस्या है। सरकारी योजनाओं के बारे में ठीक से जानकारी नहीं है। बीज और रासायनिक खादों के दाम बढ़े हैं। जमीन ढलवां है इसलिए ऊपर की जमीन पर ज्यादातर खेती नहीं हो पाती है। पानी ठीक से मिले तो पैदावार बढ़ाई जा सकती है। लोगों का कहना था कि गहरे नलकूप लगाए जाएं तो सामूहिक सिंचाई की जा सकती है।

पानी पंचायत के बारे में बातचीत की गई।

पानी पंचायत की सोच 1972 में महाराष्ट्र में सूखा पड़ने के बाद से शुरू हुई। पुणे जिले में पिछले 15 सालों से 20 गांवों में पानी पंचायत काम कर रही है। इसमें भूमिहीन लोगों का भी पानी पर अधिकार है। पानी पंचायत की नीतियां—

— घर के सदस्यों के अनुपात से पानी का बंटवारा।
— ज्यादा पानी वाली फसलों के लिए वर्षा के पानी का इस्तेमाल।
— भूमिहीनों को भी पानी पर बराबर का हक।
— पानी के लिए 1/4 खर्चा किसानों को खुद करना पड़ेगा।
— पूरी जमीन का ठीक से उपयोग करना होगा।

पानी पंचायत के बारे में ज्यादा जानकारी के लिए लिखें:—श्री बी.आर. सालुंके, "पानी पंचायत" पोस्ट बा. न. 1202, 67 हाडपसर इंडस्ट्रियल ऐस्टेट, पुणे-411013 (महाराष्ट्र)

महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के राले गांव—सिद्धी में अन्ना साहेब हज़ारे सूखा पीड़ित क्षेत्र में बरसात के पानी को छोटे-छोटे बांधों से रोक कर सिंचाई का बंदोबस्त करते हैं। अब यह गांव पूरे साल हरा-भरा दिखाई देता है। गरीब किसानों की आमदनी कई गुना बढ़ गई है। ज्यादा जानकारी के लिए लिखें:—श्री अन्ना साहब हज़ारे, राले गांव सिद्धी वाया परनर तहसील, जि. अहमदनगर, महाराष्ट्र-414302।

जिधर गंगा बहती है वहां सूखा क्यों? देश में जब पानी का अभाव नहीं है तो खेती के लिए पानी कम क्यों मिलता है? असल में यह हमारी सामाजिक और राजनैतिक व्यवस्था से जुड़ी हुई समस्याएं हैं। अभी जो देश में कृषि नीति है उसमें बहुत से सुधारों की ज़रूरत है। कार्यशाला में इस पर बातचीत हुई।

नई कृषि नीति कैसी हो?

- ग्राम सभा के माध्यम से जमीन का समान वितरण।
- छोटे किसानों को बढ़ावा देना ताकि वह खेती से पूरा फायदा उठा सकें।
- अधिक पैदावार देने वाले देशी बीजों के लिए बढ़ावा देना।
- कम्पोस्ट खाद, गोबर खाद और स्थानीय कीड़े मारने वाली दवाइयों को बढ़ावा।
- ज़रूरी कृषि मशीनों के इस्तेमाल के लिए बढ़ावा।
- लघु सिंचाई योजना को बढ़ावा।
- ऐसे कर्मचारी रखे जाएं जो इन नीतियों को लागू करने में मदद करें।
- सरकार भूमि सुधार कार्यक्रम को तेजी से

चलवाए।

- भूमि संबंधी अधिकारों पर ग्राम-सभा का नियंत्रण।
- उद्योग नीति ऐसी हो जिससे कृषि को बढ़ावा व मदद मिले।
- सामूहिक खेती करने वाले छोटे किसानों को सरकारी अनुदान के खास फायदे मिल सकें।
- पशु-आधारित खेती के काम को बढ़ावा।
- बड़ी-बड़ी मशीनों के बजाए स्थानीय औजारों को प्राथमिकता।
- कृषि-उपज का मूल्य गांवों की समिति के माध्यम से हो।
- जमीन संबंधी कानूनी जानकारी।
- जमीन एवं सिंचाई संबंधी सरकारी योजनाओं की जानकारी।
- जल, जंगल, जमीन पर लोगों के हक के बारे में प्रशिक्षण।
- वन भूमि पर सरकारी नीति व कानून की जानकारी।
- कम्पोस्ट खाद तैयार करने के बारे में जानकारी।
- जमीन के तरह-तरह के उपयोग पर काम करने वाली संस्थाओं की जानकारी।

इन सभी पर सामूहिक रूप से काम करने से काफी समस्याओं के हल निकाले जा सकते हैं।

"धरती और लोग" पर आधारित

अबला अब तू सबला बन जा

अबला अब तू सबला बन जा
बन के चंडी रण में अड़ जा
लाख सहे दुःख तुमने अब तक

अब दुःख सहने की भूल तू मत कर
बढ़ा दे पग तू मंजिल गढ़ दे
तू घर से बाहर आकर पढ़ ले

सहज सरल थी अब दृढ़ हो जा
बदलना सीख ले मत खा धोखा
लाज शर्म से सिर झुका था

बर्बर समाज ने खूब लूटा था
नहीं रुको, ले आओ स्वर्णिम दिन
जागो! समय रुका है तुम बिन।

सोहराब खां

समूह के साथ कैसे काम करें

तारा आहलूवालिया

यहां कुछ ऐसे मोटे-मोटे बिन्दु दिए जा रहे हैं जिनसे समूह के काम में मदद मिलेगी। गांवों में काम के दौरान यह विशेष उपयोगी होंगें।

- बैठक में मौजूद सभी लोग आपके लिए एक बराबर महत्वपूर्ण हैं।
- सबसे पहले समूह का विश्वास जीतना बहुत ज़रूरी है। इसके लिए आसान व सामूहिक समस्या को पहले उठाना चाहिए। जटिल व व्यक्तिगत समस्या मजबूत समूह बन जाने के बाद उठानी चाहिए।
- चर्चा के बाद निर्णय अकेले न लिए जाएं। बातचीत से जुड़े हर व्यक्ति का फैसला महत्व रखता है।
- व्यक्तियों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण रवैया, लोगों की समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता और समझ जरूरी है।
- पितृसत्ता, आर्थिक शोषण जैसी बातें उन्हें पराई लगेंगी। यदि हम उनसे अपने ही बचपन की, भाई-बहनों, बेटी-बेटे के भेदभाव की बात करें तो उनके लिए मुद्दे को समझना आसान होगा। सुबह से शाम तक न खत्म होने वाले काम की बात से शोषण की बात पर आएं तो समझ आसानी से बनेगी।
- सभा में ऊंच-नीच की बात नहीं होनी चाहिए। हिस्सा लेने वाले सभी बराबर महत्वपूर्ण हैं।
- समूह में आए भागीदारों का संकोच खोलने, उनसे जुड़ने का सबसे अच्छा तरीका है अपने दुख व संघर्ष की बात से शुरू करना।

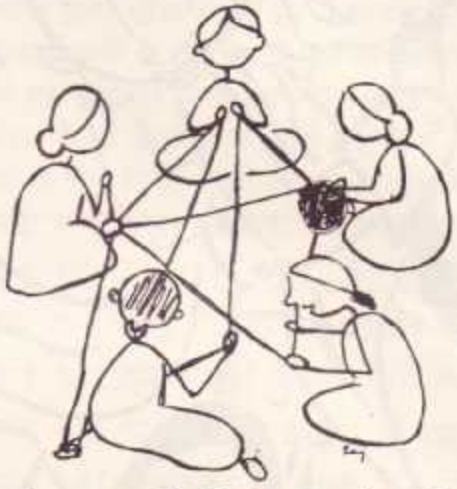

- सबको बराबर से बोलने का मौका मिलना चाहिए। जहां औरतों को अपनी ज़रूरत, हिस्सेदारी, योग्यता का पता चलेगा तो वे खुद ही समूह से जुड़ी रहना चाहेंगी।
- हर कार्यक्रम में पूरे समूह की भागीदारी होनी ज़रूरी है।
- जो लोग आपसे जुड़ नहीं रहे हैं या जो संकोची हैं उनसे अलग से बैठकर आपसी समझ बनानी चाहिए।
- सामाजिक बदलाव के मुद्दों में जुड़ने व सोच बनाने में समय लगता है। ऐसे में बहुत धैर्य व शांति से काम करना चाहिए। समूह से बराबर संपर्क बनाए रखना और उनमें मुद्दों के प्रति जागरूकता पैदा करनी चाहिए।
- कुछ खेल खेलें जो सामूहिक भावना को बढ़ाते हैं। गीत जो उनके जीवन से जुड़े हों सामूहिक भागीदारी में मदद देते हैं।

□

रामकली ने हार नहीं मानी

वीणा शिवपुरी

इस देश की लाखों बच्चियों की तरह रामकली को भी बचपन में ही ब्याह दिया गया था। सात साल की कच्ची उम्र में इसे ब्याह के मायने भी नहीं मालूम थे। रामकली का बाप मर चुका था। उसके मामा ने उसे बछिया की तरह मंगली के खूंटे से बांध दिया।

मंगली निकला कसाई। आखिर उसने रामकली के मामा को पूरे आठ हजार रुपए दिए थे। यह शादी तो नाम की थी। मंगली ने एक गुलाम खरीदी थी। भला सात साल की बच्ची को क्या मालूम किसने उसे बेचा और किसने उसे खरीदा।

बच्ची हुई समरथ

रामकली जवान हुई लेकिन उसका मन मंगली से कभी न मिला। मिलता भी कैसे, मंगली शराबी और बदमिज़ाज था। कामधाम कुछ न करता, बस घर बैठा रामकली की मजदूरी पर खाता।

कौन औरत भला ऐसे मर्द के साथ रहना चाहेगी। न प्यार, न देखभाल और न ही कामधंधा। ऐसी शादी में रामकली का दम घुटता था, लेकिन क्या करती। कहां जाती, किससे अपना दुखड़ा सुनाती। मर्दों की इस दुनिया में सब यही कहते, वह तेरा पति है।

समय बीतता गया। तीन बच्चे भी हो गए।

दिमाग खुला

उम्र के साथ रामकली की समझ बढ़ी। उसने ऐसी शादी मानने से इनकार कर दिया।

रामकली कहती—"मेरे मामा ने मुझे बेच दिया। यह शादी मेरी मर्ज़ी से नहीं हुई। उस पर मुझे ही मजदूरी करके अपना, बच्चों का और मंगली का पेट भरना पड़ता है। क्यों मानूं ऐसी शादी को?"

रामकली को यह नहीं मालूम था कि देश का कानून भी उसे ऐसी शादी न मानने का हक़ देता है। वह तो अपनी मन और बुद्धि की बात मान रही थी। उत्तर प्रदेश के उस पिछड़े इलाके में न कोई कानून की बात करता था, न अदालत जाने की सोचता था। उनकी अदालत तो पंचायत ही थी।

पंचायत की दुहाई

रामकली ने पंचों को अपनी कहानी सुनाई। जरा तो सोचो, जरा तो दया करो। मुझे इस शादी से मुक्ति दे दो। पंच कौन थे? वे भी मंगली जैसे मर्द। अगर औरतें ऐसे बोलने लगेंगी तो पतियों की तानाशाही कैसे चलेगी।

पंचों ने कहा—"रामकली तुझे मंगली के साथ ही रहना पड़ेगा।"

मंगली जीत गया। पंचायतघर से अपनी झोंपड़ी तक रामकली को जबरन घसीटता ले गया। एक बार फिर रामकली उसी नरक में रहने लगी। लेकिन इस अन्याय को उसने माना नहीं। उसने तय कर लिया था वह हार नहीं मानेगी।

कुछ साल और बीते। फिर एक बार उसने पंचायत को गुहार लगाई। इंसाफ की मांग की। फिर एक बार पंचायत ने उसे औरत का धर्म समझाया।

औरत का धर्म क्या

हमारा समाज किसे औरत का धर्म कहता है? चुपचाप, बिना सींग-पूंछ हिलाए हर अत्याचार को सहते जाना। ऐसा तो जानवर भी नहीं करता। उसे कोई मारेगा तो वह भी हमला करता है। बस, औरत के पास कोई हक नहीं है। क्यों? क्या वह इंसान नहीं? उसके और मर्द के हकों में इतना अंतर क्यों। क्या दोनों के हाथ-पैर, दिल-दिमाग बराबर नहीं? क्या दोनों को बराबर चोट नहीं लगती, दुख-तकलीफ नहीं होती? औरत का धर्म वही है जो इंसान का है और औरत का हक भी वही है जो इंसान का है।

अठारह साल बीत गए लेकिन रामकली अपनी मांग पर डटी रही। उसने फिर पंचायत का दरवाज़ा खटखटाया। "मेरा मंगली से तलाक करा दो वरना मैं अपनी जान दे दूंगी। बस, बहुत सह लिया। अब मैं मर-मर के नहीं जीऊंगी।"

समाज ने उसे उसके बच्चों का वास्ता दिया। मंगली ने कहा वह बेटे रख लेगा। उसे कुछ भी सामान नहीं देगा।

"न दे। मैं कमा लूंगी। बेटे भी रख ले, मैं छाती पर पत्थर रख लूंगी। अब कोई मुझे पति, घर, बच्चों के नाम पर रोक नहीं सकता। जब मेरी जिंदगी में कोई सुख नहीं तो पति, बच्चे, घर किस काम के।"

सबने रामकली की मजबूत इच्छाशक्ति के सामने हार मान ली। पंच भी समझ गए कि रामकली को और दबाना संभव नहीं। उन्होंने रामकली को मंगली से आज़ाद कर दिया। पच्चीस साल की रामकली अब अपनी जिन्दगी फिर से शुरू करना चाहती है। अभी तो बहुत कुछ है देखने के लिए, करने के लिए। अब तक तो सिवाए दुख और आंसुओं के उसे मिला ही क्या।

हर औरत का हक

चैन और सुख का जीवन हर औरत का हक है। अगर रामकली की कानून तक पहुंच होती तो शायद उसे अठारह साल तक दुख न उठाने पड़ते। पिछड़े इलाके की आदिवासी औरत होते हुए भी उसने अपने हकों के लिए संघर्ष किया, आवाज़ उठाई और अंत में विजय पाई। □

तुम दीप शिखा बन
उजियाला फैलाओ
तुम शक्तिधाम, सृजनशीला
बुद्धि आलोक फैलाओ
विद्याहीन रहे न कोई नारी
ऐसी कोई जुगत बनाओ
जो रखे अपना ध्यान प्रभु उसके सहाए
ऐसी सोच बढ़ाती जाओ।

जीवन के बदलते दिन

मेरे हाथों की चूड़ियां खनक गई,
मैंने हैण्डपम्प बनाना सीख लिया
मेरे सिर का घूंघट खुल भी गया,
मैंने इण्डिया मार्क थ्री लगाना सीख लिया
चाहे धोती फटी—चाहे चूड़ी टूटी,
मैंने टूल्स पकड़ना सीख लिया
अरे हाथों में छाले पड़ भी गए,
मैंने प्लेटफार्म बनाना सीख लिया

मेरी-तेरी, हमसे-तुमसे, हमारी-तुम्हारी
सुनो बहन!
उतार-चढ़ाव की जिन्दगी में बदलते कदम।
मैं, एक हैण्डपम्प मैकेनिक हूं।

हूं तो तुम्हारी ही तरह गांव की गरीबन, मजदूर, कोल, हरिजन और अनपढ़। तुम तो जानती ही हो कि हम औरतों की जिंदगी पानी से इतने नजदीकी से जुड़ी है कि घर में पानी भरें तो हम औरतें ही।

और, जब हैण्डपम्प खराब होता है तो झेलना भी हम औरतों को ही पड़ता है।

जल निगम, एस.डी.एम., बी.डी.ओ. तथा ए.डी.एम. को ना जानने वाली हम बहनों ने तय किया कि क्यों न हम औरतें ही हैण्डपम्प बनाएं? कुछ हंसी, कुछ मजाक, कुछ ठिठोली, कुछ व्यंग और कुछ शर्तों के साथ हम औरतों ने हैण्डपम्प बनाना सीख ही लिया।

अरे! तुम याद करो कि पहले गांव में पम्प सुधारने पुरुष मैकेनिक आते थे। हैण्डपम्प बनाकर चले जाते थे। हमें पता ही नहीं था, जबकि पानी तो औरतें ही भरती हैं।

अब जब से हम बहनों ने पम्प बनाना शुरू किया, तब से तुम हमारे पास आती हो, बातें पूछती हो तो जानकारी भी मिलती है।

अरे हां, एक बात बताते खुशी हो रही है कि पहले जब भी हम गांव में हैण्डपम्प बनाने जाती तो गांव वाले कहते—

"मेहरिया का हैण्डपम्प बनइ हैं?"

"अरे! ई रोटी-गोबर-चूल्हा-बर्तन करने वाली का कर सकि हैं?"

"पम्प न छुओ नहिं तो बिगड़ जाई।"

लेकिन जब से हैण्डपम्प मरम्मत करके पानी निकाल दिया तो बस... गांव के ही लोग आकर कहने लगे—

"बहिनी, फिर आना, तुम तो गांव की रहने वाली हो, हमें जल्दी से मिल जाओगी, हम आसानी से सूचना दे देंगे। अब हमें भटकना न पड़ेगा।" जाति और औरत का भेद-भाव भूलकर कहते हैं कि—"आओ बहिनी रोटी खा जाओ।"

हमारी ज़िंदगी में कुछ ऐसे बदलाव आए कि अब लोग हमसे नमस्ते करने लगे और सीधा हमारे घर पर, रास्ते में, बाजार में मिलकर खराब हैण्डपम्प की सूचना देने लगे और हम भी गांव-गांव में लोगों को (हैण्डपम्प बनाकर) प्यास से बचाने लगे।

आरती श्रीवास्तव
महिला समाख्या परियोजना
कर्वी (बांदा)

दहेज मृत्यु खत्म करने के लिए सिर्फ कानून काफी नहीं

"आज की ज़रूरत है एक सामूहिक चेतना जगाने की, सहानुभूतिपूर्ण सोच और रवैया अपनाने की। अगर पुरुष लालच, घृणा, गुस्सा और स्वार्थ छोड़कर आपसी प्रेम और भाइचारे को अपनाएं तथा औरतें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो सकें तो दहेज प्रथा को खत्म किया जा सकता है।"

ये शब्द हैं सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश डा. ए.एस. आनंद के। डा. आनंद और श्री एन.पी. सिंह न्यायाधीशों ने दहेज मृत्यु संबंधी मामले में अपराधी को दो धाराओं के तहत हत्या और साजिश के लिए दोषी ठहराया।

डा. आनंद ने यह भी कहा कि "बुराई रोकने के लिए केवल कानून ही काफी नहीं है। महिलाओं को शिक्षित करने एवं कानूनी शिक्षा देने और उनके अधिकारों के प्रति जागरूक बनाने के लिए एक जन आंदोलन ज़रूरी है। जहां अधिकांश महिलाएं अनपढ़ हैं अदालत की भूमिका और भी ज़्यादा महत्वपूर्ण हो जाती है।

"अदालत से अपेक्षा की जाती है कि बहुत तकनीकी नियमावली या गवाही की कमी में न जाकर एक संवेदनशील रवैया अपनाए। अगर अपराधी छूट जाएंगे तो अपराधों को और बढ़ावा मिलेगा।"

मामला इस प्रकार था—18 मई 1979 को कुंडला कोटी नागबनी का ब्याह आंध्र प्रदेश के एक गांव में हुआ। 23 अगस्त 1981 को उसके ऊपर रसोई में मिट्टी का तेल छिड़ककर उसे जिंदा जला दिया गया।

• दहेज लेने और देने वाले दोनो, कानून की नजर में अपराधी हैं।

जब कुंडला का ब्याह हुआ था, उसके माता-पिता ने 50,000 रु. नकद, 50 सोने की गिन्नी और 2 एकड़ भूमि दहेज में देना स्वीकार किया था। नकदी रुपया और 15 सोने की गिन्नी तो ब्याह के समय दे दी गईं बाकी के लिए कुंडला को काफी तंग किया जा रहा था। बाद में जमीन का कब्जा भी कुंडला के पति को दे दिया गया था। उसका पंजीकरण उसके नाम होना बाकी था। 35 सोने की गिन्नियों का तकाजा भी बराबर किया जा रहा था। इस सब को लेकर कुंडला को बेहद प्रताड़ित किया गया और अंत में उसकी जान ले ली।

निचली अदालत में उसे आत्महत्या का मामला बता कर खारिज कर दिया गया था। आंध्र प्रदेश हाईकोर्ट में निचली अदालत के फैसले को गलत बताते हुए पति को कुंडला की मौत के लिए दोषी ठहराया और सजा सुनाई गई। सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट का फैसला सही ठहराया।

श्री बालकृष्ण (हिन्दुस्तान टाइम्स)

अहिल्या की सच्चाई

विजी श्रीनिवासन

मैं अहिल्या को कितना प्यार करती थी। एकदम अपनी बड़ी बहन की तरह। खूब प्यारी बहन। लेकिन अब कहां है वह। उसे तो मार दिया उसके पति ने। लेकिन आज तक किसी को सचाई का पता नहीं। कितना चालाक था वह। सचाई को तोड़ मरोड़ दिया उसने।

अहिल्या सुंदर थी, बुद्धिमान थी। औरतों के हकों की बात करती थी। स्त्री-पुरुष के बीच समानता चाहती थी। मैं उसकी बातें सुनते कभी नहीं थकती थी। हम गांव के बीच में रहते थे। चमड़े का काम करते थे। मरे हुए पशुओं का चमड़ा उतारते और उसके जूते, बाल्टियां, घोड़ों की काठी बनाते।

एक बार बहुत से लोग आए। लंबे, चौड़े, गोरे पुरुष। घोड़ों पर बैठ कर भाले घुमाते हुए। वे हम सबके स्वामी बन गए। हमें गांव से बाहर रहने के लिए मजबूर कर दिया।

वे लोग आर्य कहलाते थे। हमें वे गंदा और बुरा कहते थे। क्योंकि हम काले थे, चपटी नाक थी। वे हमें अछूत मानते थे। फिर भी हम उनकी सेवा करते। उनके लिए चमड़े की चीजें बनाते थे। हमने मान लिया था कि यह शायद हमारे पूर्व जन्म के कर्मों का फल है।

अहिल्या का पति गौतम

गौतम अध्यापक था। लड़को को पढ़ाता, मंत्र सिखाता था। अहिल्या भी संस्कृत जानती थी। उसने सुन-सुन कर बहुत कुछ सीख लिया था। वह ताड़ पत्र पर लिखी पुस्तकें भी पढ़ती थी।

एक बार उसने पति से कहा—"हम यहां पहले से रहने वाले लोगों के साथ इतना बुरा बरताव क्यों करते हैं?"

गौतम गुस्से से चिल्लाने लगा। उसने कहा—"तुम औरत हो इसलिए मूर्ख हो। औरत नर्क का द्वार होती है। महीने में तीन दिन वह भी अछूत होती है। इसीलिए तुम शूद्रों की हिमायत करती हो।" यह कह कर गौतम उसे मारने दौड़ा। अहिल्या बेहोश होकर गिर पड़ी।

मेरी प्यारी अहिल्या

अहिल्या भी आर्य थी, लेकिन फिर भी मुझे कितना प्यार करती थी। मैं रोज़ अहिल्या के लिए अपने बगीचे से फूल ले जाती थी। इसलिए अहिल्या से मिल पाती थी।

अहिल्या मेरे भाई से प्यार करती थी। दोनों कई बार जंगल में बैठ कर खूब बातें करते थे। मेरा भाई उसे हमारे प्राचीन धर्म, देवी-देवताओं के बारे में बतलाता था। मुझे मालूम है कि उन दोनों के बीच कोई शारीरिक संबंध नहीं था। लेकिन अहिल्या कहती थी तुम्हारा भाई मुझे अपने बराबर मानता है। प्यार और मित्रता देता है। शायद किसी दिन मैं उसे पा सकूंगी।

अभागी रात

उस रात चांदनी बिखरी हुई थी। चंपा और चमेली के फूलों की खुशबू फैली हुई थी।

एकाएक आधी रात में मुर्गा बोल उठा। गौतम ने समझा सुबह होने को है। वह उठ कर नदी किनारे चला गया। जैसे ही वह झोपड़ी से बाहर गया मेरा भाई अहिल्या के पास पहुंचा। थोड़ी ही देर में गौतम को अपनी भूल मालूम हो गई। वह लौट आया। मेरा भाई पीछे से निकल गया।

गुस्से से पागल गौतम ने अहिल्या को बालों से पकड़ कर खींचा। झोंपड़ी से बाहर लाकर वह उसे मारता गया। गौतम ने अहिल्या को कुछ कहने का मौका ही नहीं दिया। अहिल्या की आंखों से आंसुओं की धार बहती रही। प्राण त्यागने से पहले उसने कहा, "जब तक इस धरती पर औरतों के साथ अन्याय होता रहेगा यहां बाढ़ आती रहेगी।" उसकी आंखों से फिर आंसू बहने लगे। वह वहीं खत्म हो गई। गौतम ने अहिल्या की हत्या कर दी।

गौतम ने गड्ढा खोद कर अहिल्या को दबा दिया। उस जगह खूब बड़ी चट्टान खिसका दी। सुबह उसने सबके सामने एक कहानी गढ़ दी। रात को इंद्र ने मेरा रूप धर कर अहिल्या का सत भंग कर दिया था। इसलिए शापवश अहिल्या चट्टान बन गई है।

वर्षों बाद उसने अहिल्या की छोटी बहन से शादी कर ली। अहिल्या के दोबारा स्त्री बनने की कहानी इसी तरह पैदा हुई। गौतम में यह स्वीकारने की हिम्मत नहीं थी कि अहिल्या ने उसके बजाय एक चमड़े का काम करने वाले लड़के को पसंद किया था। अहिल्या को जो प्यार, इज्ज़त और बराबरी मेरे भाई से मिली थी वो गौतम ने कभी नहीं दी। उसने सदा अहिल्या को अपनी संपत्ति समझा था। क्या औरत को यह चुनने का हक नहीं कि वह किससे प्यार करे? □

प्रेरकों ने लिखा है

जैनी जन शिक्षण निलियम से 52 महिलाएं जुड़ी हैं जिनमें 30 सक्रिय कार्यकर्ता हैं। प्रेरक चूड़ामणि इनको 'सबला' पढ़कर समझाती हैं। जैनी, मानपुर, मेवाड़ा आदि गांवों की महिलाओं ने 'सबला' पढ़ी और पसंद की है। ऐसी पुस्तकें निकलती रहीं तो महिलाओं में चेतना आ जाएगी और यही साक्षरता है। महिलाएं गीत भी गाती हैं और नारे भी लगाती हैं।

श्रीमती चूड़ामणि स्वर्णकार
जैनी, जिला मुरैना (म.प्र.)

महिलाओं के लिए सरकार द्वारा चलाए जाने वाले कार्यक्रमों की जानकारी भी हमें 'सबला' पत्रिका के माध्यम से दें। किसको संपर्क करना है, कृपया लिखें।

प्रेरक जाबाल
सिरोही (राज.)

अबला को आधार

'सबला' पोथी एक है अबला को आधार
मां जैसी ममता इस पोथी में प्यार
संशय समस्या नारी की 'सबला' देय निवार
चेतना हर नारी में ज़रूरी है आज
अंधकार को उजारा में 'सबला' देवे मोड़
संपादन सुंदर घणौ, सरल शैली में बात
कवि कलम सूं 'सबला' की शोभा कही न जात

कालेराम देवासी
प्रेरक—झुठापाली (राज.)

बीड़ी कामगार कोआपरेटिव

जुही जैन

मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले में भारत का बीड़ी बनाने का सबसे पुराना उद्योग है। इस उद्योग में 80 प्रतिशत महिला मज़दूर काम करती हैं।

उद्योग की पृष्ठभूमि

बीड़ी बनाने का काम घरेलू उद्योग की तरह चलाया जाता है। रोज़गार के दूसरे साधनों के अभाव और असंगठित स्वभाव की वजह से यहां मज़दूरों का बहुत शोषण होता है। कभी-कभी तो सारा दिन काम करने के बाद उन्हें कमाई का आधा हिस्सा ही मिलता है। बाकी हिस्सा ठेकेदार ग़ैरकानूनी तरीकों से काट लेते हैं। चूंकि यह कामगार नियमित मज़दूर नहीं हैं इसलिए सरकारी योजनाओं के फ़ायदे भी इन्हें नहीं मिल पाते हैं।

औरतें संगठित हुईं

शोषण से तंग आकर बीड़ी बनाने वाली औरतों ने खुद को संगठित किया। 'सेवा' संस्था की मदद से औरतों ने अपना कोआपरेटिव शुरू किया। इसी के तहत औरतों के लिए एक बीड़ी उत्पादन विभाग शुरू किया गया।

कोआपरेटिव शुरू होने से औरतों को पूरा-पूरा वेतन मिलने के साथ-साथ दूसरे फ़ायदे भी हुए। अब वे बीड़ी खुद बाजार में बेचती थीं, इसलिए बिचौलियों का काम न था। इसके साथ-साथ स्वास्थ्य सुविधाएं, बच्चों के वजीफ़े, जचगी सुविधाएं भी मिल पाती हैं।

बचत करी—घर बनाए

कामगार औरतों ने अपनी बढ़ी हुई आमदनी

को बैंक में जमा करना शुरू किया। जमा की गई रकम से अब वे अपने बच्चों को पढ़ा सकती थीं। उनकी शादी, बीमारी आदि पर अब उन्हें कर्ज़ा लेने की ज़रूरत नहीं थी।

इन औरतों का सबसे बड़ा संघर्ष रहा है—अपना खुद का घर बनाना। केंद्र और राज्य सरकार ने बीड़ी मज़दूरों को घर मुहैया कराने के लिए एक योजना शुरू की है। इसके तहत उन्हें आसान किश्तों पर घर बनाने के लिए ऋण दिलाया जाएगा।

बिना पढ़े नहीं पड़नी पार

अपने लिए, अपना घर बनाने के लिए, कोआपरेटिव चलाने के लिए पढ़ना ज़रूरी था।

इन औरतों ने जाना कि अनपढ़ होना उनकी सफलता में सबसे बड़ी रुकावट था। इसलिए रात को चलने वाली कक्षाओं में महिलाओं ने पढ़ना शुरू किया।

दिन-प्रतिदिन नए-नए लोग इस कोआपरेटिव में जुड़ रहे हैं। सभी औरतें मिलजुल कर इसका काम संभालती हैं। दूसरे गांव की औरतों को संगठित करती हैं। उन्हें अपने हकों के लिए लड़ने को तैयार करती हैं। सरकार के बीड़ी मज़दूर कानून की जानकारी देती हैं। अपनी जिंदगी और खुशहाल बनाने के लिए संघर्ष करती हैं। □

नीचे दो संस्थाओं के पते दे रहे हैं जिनसे विकास कार्य में सहायता मिल सकती है।

1. **काउंसिल फॉर एडवांसमेंट ऑफ पीपुल्स एक्शन व रूरल टेकनालॉजी (कापार्ट संस्था)**
   डी-58, पंखा रोड, जनकपुरी,
   नई दिल्ली।

यह ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के लिए वित्तीय सहायता देते हैं और तकनीक संबंधी जानकारी भी। ज्यादा जानकारी के लिए इनसे सीधे पत्र-व्यवहार करें।

2. **सोसायटी फॉर पार्टिसिपेटरी रिसर्च इन एशिया (प्रिया संस्था),**
   42, तुगलकाबाद इन्स्टीट्यूशनल एरिया,
   नई दिल्ली-110062. दूरभाष:- 6451908

'प्रिया' ने वैकल्पिक कृषि एवं सिंचाई व्यवस्था पर छोटे-छोटे समूहों में काम करना शुरू किया है। आय उपार्जन के लिए शिविरों का आयोजन, प्रशिक्षण कार्यक्रम, विकास में महिलाओं की सहभागिता तथा इन पर दस्तावेज आदि निकालने का काम भी यह करते हैं। अधिक जानकारी के लिए सीधे पत्र-व्यवहार करें।

'सबला' पत्रिका को पढ़कर महिलाओं में काफी आत्मबल आया है। महिलाओं का कहना है यह पत्रिका उन्हें अवश्य मिलती रहे। महिला संरक्षण अधिनियम के तहत तमाम जानकारियां उन्हें मिलती हैं, महिलाएं पत्रिका बड़े चाव से पढ़ती हैं। केंद्र पर पहुंचने पर सर्वप्रथम आपकी ही पत्रिका के आने के बारे में जानकारी प्राप्त करती हैं। महिलाओं का अनुरोध है कि गांव में चल सकने वाले धंधों की भी जानकारी देते रहें। सभी महिलाओं का सप्रेम अभिवादन।

सुरेन्द्र त्रिपाठी—प्रेरक,
पयागपुर, बहराइच (उ.प्र.)

कुछ यहां की: कुछ वहां की

साक्षरता कक्षा में तीन पीढ़िया एक साथ पढ़ रही हैं। मोहतर गांव में कक्षा निरीक्षण के दौरान एक ऐसा दृश्य सामने आया जिसमें दादा-दादी, नानी, मामी और मां अपने ही 11 वर्षीय पुत्र या पौत्र से पढ़ना लिखना सीख रहे हैं। छठी कक्षा के छात्र बसंत कुर्रे अपने परिवार के 7 सदस्यों को साक्षर बनाने में जुटे हैं।

× × ×

पिछले एक साल से देवास शहर (म.प्र.) के स्कूल और कालेज की लगभग 75 लड़कियां एक-जुट होकर सामाजिक बुराइयों के खिलाफ़ आवाज़ उठा रही हैं। नुक्कड़ नाटक एवं गीतों के माध्यम से लड़कियों में जड़ता दूर कर चेतना जगाना एवं आत्मविश्वास पैदा करना एक साहसी कदम है। नाटक "खामोश पढ़ाई ज़ारी है" में हमारी पूरी शिक्षा व्यवस्था पर सवाल उठाया गया है।

"अदालत" नाटक छेड़छाड़ और बलात्कार से जुड़ा था। "काहे को दीनी विदेश" में औरतों के ऊपर अन्यायों के खिलाफ एक जंग छेड़ी है। ये सभी नाटक लड़कियों ने एक शिविर के दौरान मिल-जुल कर लिखे। तालाब के स्थिर पानी में एक हलचल की लहर उठी है। नई आशा का एक दीप जला है।

राजेन्द्र बंधु
देवास (म.प्र.)

कानपुर, देहात (उ.प्र.) में दर्पण संस्था महिलाओं के विकास संबंधी कार्यक्रम में लगी है। 5 गांवों की महिलाओं को जोड़कर एक समूह बनाया है और इसे नाम दिया है "महिला पंचायत"। इनकी नियमित रूप से साप्ताहिक बैठकें होती हैं। स्वास्थ्य, सफाई, पर्यावरण-रक्षा, बाल-सुरक्षा, महिलाओं की स्थिति, उनके लिए आर्थिक विकास की योजनाओं आदि पर चर्चा की जाती है। इससे महिलाओं के जीवन में क्या फर्क आया है? सुमनसिंह के शब्दों में—

"मैं सुजानसिंह गांव की रहने वाली हूं। दो साल पहले जब मैं 'दर्पण' से जुड़ी तो बहुत अटपटा लगा। बात करने में डरती थी। पसीना आ जाता था। मुंह से शब्द नहीं निकलते थे। बहुत शर्म लगती थी। एक बार संयोजक महोदय ने एक अनपढ़ और पढ़ी लिखी महिला में फर्क करने को कहा और खुद अपने आप को पहचानने के लिए मजबूर किया। इससे पछतावा तो हुआ मगर साथ ही साथ एक नया आत्म-विश्वास जगता दिखाई दिया।

"इसके बाद महिलाओं की बैठकों से, महिला दिवस के कार्यक्रमों से, पदयात्रा और अनेकों कार्यक्रमों से अंदर का डर, संकोच व शर्म सब दूर हो गए। मुझे लगा कि हमारे गांव की औरतें सिर्फ मर्दों की गुलाम हैं। जब देश की आधी जनसंख्या (औरतें) गुलाम है तो देश आजाद कैसे हो सकता है?

"आज मैं हर बात बुद्धि से तौलती हूं। गीत गाती हूं, नाटक करती हूं। औरतों को जगाना अपना फर्ज मानती हूं। मुझे रंडी, बेशर्म और भी कई ताने सुनने पड़ते हैं। पर मैं उनकी परवाह नहीं करती हूं।"

आर. ए. दिवाकर दर्पण, किरांव

गांव आखाड़ा, जिला पठानकोट (पंजाब) की सच्ची घटना है। सेवा भारती मंडल द्वारा सिलाई-कढ़ाई केंद्र में सामाजिक बुराइयों एवं शराबखोरी आदि के खिलाफ भी अभियान चलाए गए हैं। परिवार की महिलाएं व लड़कियां संकल्प लेती हैं कि इन बुराइयों से वे अपने पति एवं पिता को दूर करने की पूरी कोशिश करेंगी। वे व्रत उपवास करती हैं इस संकल्प के साथ कि वह तभी उसे खोलेंगी जब पति या पिता नशे की आदत छोड़ देंगे। केंद्र की सभी महिलाएं हर तरह से एक दूसरे की मदद को तैयार रहती हैं। इस तरह से बहुत से परिवारों में नशे की आदत छूट चुकी है।

राजकुमार जैन
सेवा भारती मंडल, कुल्लू (हि.प्र.)

भिभौंरी गांव, भिलाई (म.प्र.) में चल रहे साक्षरता अभियान के तहत् कुल 556 निरक्षरों में से 546 साक्षर बन चुके हैं। इनमें लगभग 400 महिलाएं हैं। यहां की महिलाओं ने 'अबला' छवि को बिलकुल झुठला दिया है। उन्होंने बताया कि हर दिन उस गांव में लगभग 5000 रु. की शराब की खपत थी। हर घर में उसके कारण अशांति और कलह का माहौल था। श्रीमती रामदुलारी ने बताया कि इससे गांव के बच्चों में भी शराब की लत आती जा रही है।

नशे निवारण के लिए गांव की कई जागरूक महिलाओं ने रायपुर जाकर विभाग-आयुक्त और ज़िलाधीश को ज्ञापन-पत्र सौंपा। गांव में लगातार 15 दिन तक रैली निकाली गई। रैली में उनके नारे थे—

भट्टी वाले जान लो, बोरिया बिस्तर बांध लो।
शराब भट्टी हटाना है, नारी की लाज बचाना है।

शराब की बोतल तोड़ दो, शराब पीना छोड़ दो।

रैली का असर काफ़ी नहीं हुआ तो भिभौंरी बंध बुलाया गया। इस प्रकार के बंध का यहां यह पहला मौका था। दो दिन तक महिलाओं ने शराब भट्टी के सामने धरना दिया। लेकिन ग्राम सचिव ने फर्ज़ी हस्ताक्षर करवाकर हड़ताल बंद करवा दी।

महिलाओं का कहना है कि इस संदर्भ में जानकारी लेने के लिए दो अधिकारी आए थे। वे भी पिए हुए थे। महिलाओं का जवाब था, "यह उठे हुए कदम अब नहीं रुकेंगें। आंदोलन जारी रहेगा।"

चर्चा के दौरान वहां के शिक्षित और जागरूक नवजवान भी जमा हो गए हैं। वे इस अभियान में साथ देने को तैयार हैं। पुलिस खुद शराबखोरी को बढ़ावा देती है। महिलाओं में अभी भी जोश और उत्साह है। "हम होंगे कामयाब एक दिन।"

सहदेव देशमुख
लोकमत समाचार संवाददाता

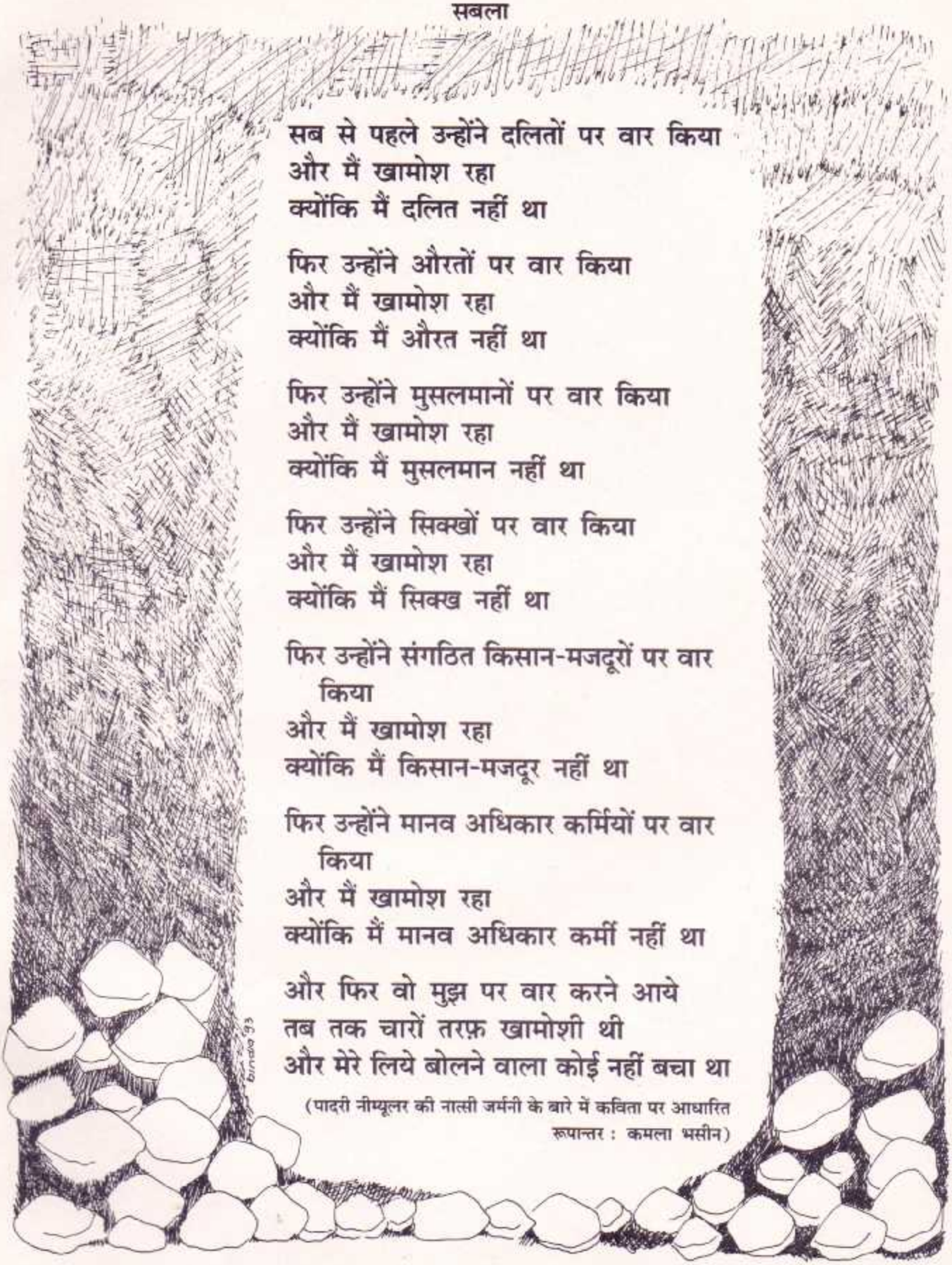

सब से पहले उन्होंने दलितों पर वार किया
और मैं खामोश रहा
क्योंकि मैं दलित नहीं था

फिर उन्होंने औरतों पर वार किया
और मैं खामोश रहा
क्योंकि मैं औरत नहीं था

फिर उन्होंने मुसलमानों पर वार किया
और मैं खामोश रहा
क्योंकि मैं मुसलमान नहीं था

फिर उन्होंने सिक्खों पर वार किया
और मैं खामोश रहा
क्योंकि मैं सिक्ख नहीं था

फिर उन्होंने संगठित किसान-मजदूरों पर वार किया
और मैं खामोश रहा
क्योंकि मैं किसान-मजदूर नहीं था

फिर उन्होंने मानव अधिकार कर्मियों पर वार किया
और मैं खामोश रहा
क्योंकि मैं मानव अधिकार कर्मी नहीं था

और फिर वो मुझ पर वार करने आये
तब तक चारों तरफ़ खामोशी थी
और मेरे लिये बोलने वाला कोई नहीं बचा था

(पादरी नीम्यूलर की नात्सी जर्मनी के बारे में कविता पर आधारित
रूपान्तर : कमला भसीन)